UPSC-CSE 2027/28

DAILY CURRENT AFFAIRS

ONE STOP SOLUTION

By **Faiyaz Sir**



The Indian EXPRESS

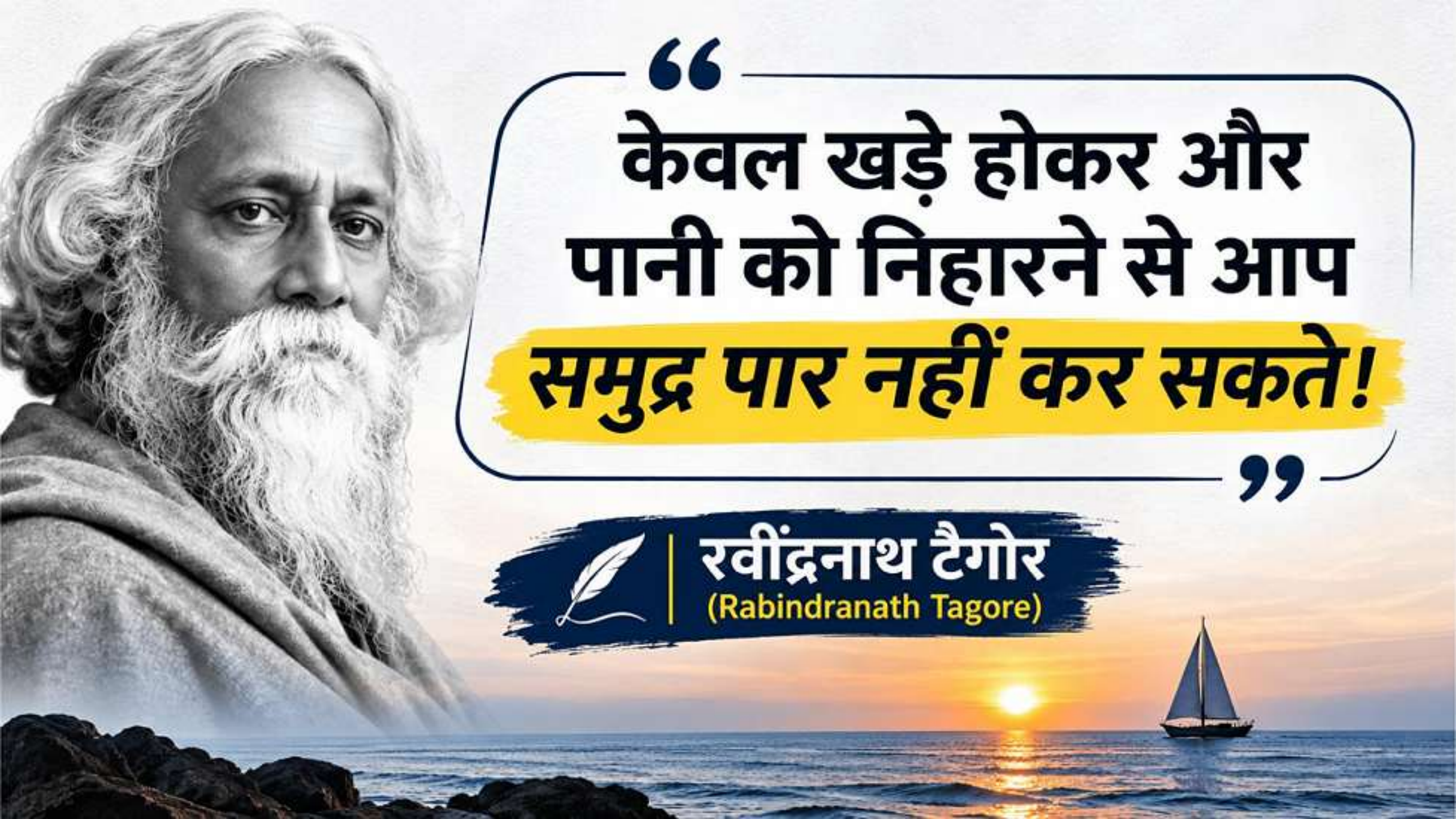
THE HINDU

pib
PRESS INFORMATION BUREAU

17 NOVEMBER

COMPLETE COVERAGE | EXAM FOCUSED | ANALYSIS MADE EASY | STATIC + CURRENT INTEGRATION

STAY AHEAD
STAY PREPARED


“
केवल खड़े होकर और
पानी को निहारने से आप
समुद्र पार नहीं कर सकते!
”
रवींद्रनाथ टैगोर
(Rabindranath Tagore)

आज क्या पढ़ेंगे?

- लखपति दीदी पहल
- भारत के अंतरिक्ष अर्थव्यवस्था के द्वार खोलना
- युगे युगीन भारत संग्रहालय
- Census 2027 – Religious Issues
- ECI/SIR
- Cyclone Akvan
- Aadhar Card Issue Over Blind Person
- PLFS
- Earth shot Prize
- COP-31
- SCO Civilizational Dialogue Forum
- ISRO – Astronaut Candidates
- LRS – Liberalised remittance Scheme
- APEC
- India-ASEAN & East Asia summit 2026
- Ukraine – Russia War
- Iran- Bahrain Conflict
- Jay shah – Re-elected Chairman of ICC
- 45th International Trade Fair

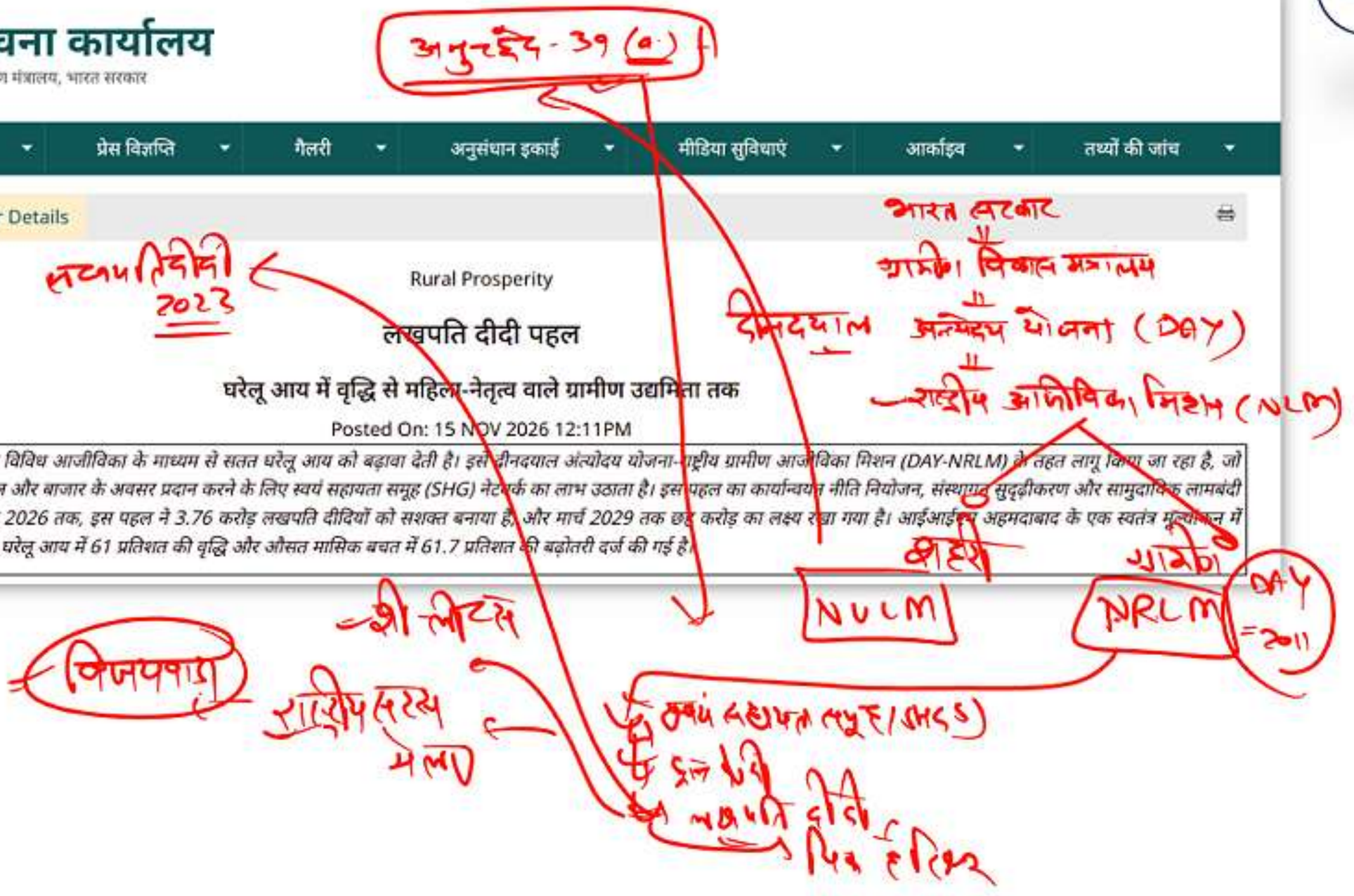
Rural Prosperity

लखपति दीदी पहल

घरेलू आय में वृद्धि से महिला-नेतृत्व वाले ग्रामीण उद्यमिता तक

Posted On: 15 NOV 2026 12:11PM

लखपति दीदी पहल महिला उद्यमिता और विविध आजीविका के माध्यम से सतत घरेलू आय को बढ़ावा देती है। इसे दीनदयाल अंत्योदय योजना-राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन (DAY-NRLM) के तहत लागू किया जा रहा है, जो ग्रामीण महिलाओं को वित्तीय पहुंच, कौशल और बाजार के अवसर प्रदान करने के लिए स्वयं सहायता समूह (SHG) नेटवर्क का लाभ उठाता है। इस पहल का कार्यान्वयन नीति नियोजन, संस्थागत सुदृढ़ीकरण और सामुदायिक लामबंदी के चरणबद्ध दृष्टिकोण को दर्शाता है। जून 2026 तक, इस पहल ने 3.76 करोड़ लखपति दीदियों को सशक्त बनाया है, और मार्च 2029 तक छह करोड़ का लक्ष्य रखा गया है। आईआईएम अहमदाबाद के एक स्वतंत्र मूल्यांकन में लखपति दीदी परिवारों की औसत मासिक घरेलू आय में 61 प्रतिशत की वृद्धि और औसत मासिक बचत में 61.7 प्रतिशत की बढ़ोतरी दर्ज की गई है।



निर्वाह से सतत आजीविका तक

- लखपति दीदी पहल ग्रामीण भारत में महिलाओं की आर्थिक भागीदारी को मजबूत करने का एक प्रमुख प्रयास है। इसका उद्देश्य सतत आजीविका के अवसरों और उद्यम विकास के माध्यम से घरेलू आय में सुधार करना है। सरकार ने इस पहल की घोषणा **15 अगस्त 2023** को की थी। शुरुआत में इसमें **स्वयं सहायता समूह (SHG) परिवारों** की **दो करोड़ महिलाओं** को शामिल करने का लक्ष्य रखा गया था। बाद में फरवरी 2024 में इस लक्ष्य को बढ़ाकर **तीन करोड़** कर दिया गया। इस पहल का लक्ष्य **मार्च 2029 तक छह करोड़** लखपति दीदी बनाना है। इस लक्ष्य की परिकल्पना फरवरी 2026 में की गई थी।
- लखपति दीदी वह स्वयं सहायता समूह (SHG) सदस्य है जिसके परिवार की **वार्षिक आय कम से कम 1 लाख रुपये** है। इस मानदंड में व्यक्तिगत आय के बजाय कुल घरेलू आय को ध्यान में रखा जाता है। इस लक्ष्य में पात्र **कृषि** और **गैर-कृषि गतिविधियों** से होने वाली आय का योगदान होता है। इसकी **गणना खर्चों को घटाने के बाद** की जाती है और यह कृषि मौसमों या व्यावसायिक चक्रों के दौरान **सतत** बनी रहनी चाहिए।
- यह पहल **दीनदयाल अंत्योदय योजना-राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन (DAY-NRLM)** के संस्थागत नेटवर्क पर आधारित है। इसका उद्देश्य ग्रामीण महिलाओं को केवल जीवन-निर्वाह आधारित गतिविधियों से आगे ले जाना है। इसके दृष्टिकोण में आजीविका विविधीकरण, वित्तीय समावेशन, कौशल विकास और उद्यम सहायता शामिल है।

3.76 करोड़ ग्रामीण SHG महिलाओं को लखपति दीदी के रूप में सशक्त बनाया गया

- जून 2026 तक, **3.76 करोड़** ग्रामीण SHG महिलाओं को लखपति दीदी के रूप में सशक्त बनाया जा चुका था और **5.70 करोड़** महिलाओं की पहचान संभावित लखपति दीदी के रूप में की गई थी।
- 17 राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों के 6,531 उत्तरदाताओं को शामिल करते हुए आईआईएम अहमदाबाद द्वारा किए गए लखपति दीदी पहल के एक **स्वतंत्र मूल्यांकन** में **परिवारों की आर्थिक स्थिति में सुधार** की सूचना दी गई। औसत मासिक घरेलू आय में **61 प्रतिशत** की वृद्धि हुई, जबकि औसत मासिक बचत में **61.7 प्रतिशत** की बढ़ोतरी दर्ज की गई।

संस्थागत आधार: DAY-NRLM और SHG नेटवर्क

- लखपति दीदी पहल का संचालन DAY-NRLM के माध्यम से होता है। सरकार ने **जून 2011** में DAY-NRLM की शुरुआत की थी। यह गरीब ग्रामीण परिवारों की महिलाओं को स्वयं सहायता समूहों में संगठित करता है। ये समूह **नियमित बचत** और **सामूहिक वित्तीय गतिविधियों** को बढ़ावा देते हैं। वे सदस्यों को बैंकों, ऋण, प्रशिक्षण और बाजारों से भी जोड़ते हैं। 12 नवंबर 2026 तक, DAY-NRLM ने लगभग **10.13 करोड़** SHG सदस्यों को **94.40 लाख** SHGs में संगठित किया है। SHG एक व्यापक संस्थागत संरचना के माध्यम से कार्य करते हैं। **ग्राम संगठन** और **संकुल स्तरीय संघ** इस नेटवर्क को मजबूत करते हैं। इस संस्थागत आधार ने लखपति दीदी पहल के लिए **वितरण तंत्र** प्रदान किया। इसने सरकार को एक अलग संरचना स्थापित करने के बजाय मौजूदा सामुदायिक संस्थानों का उपयोग करने में सक्षम बनाया।

पहल का विकास और विस्तार

- यह पहल नीतिगत निर्णयों और कार्यान्वयन उपायों की एक श्रृंखला के माध्यम से विकसित हुई है। **2021** में, सरकार ने राज्यों को SHG परिवारों के बीच सतत आजीविका को बढ़ावा देने और कृषि तथा गैर-कृषि गतिविधियों में विविधता लाने की सलाह दी। **अगस्त 2023** में, सरकार ने **दो करोड़ ग्रामीण SHG महिलाओं** को लखपति दीदी के रूप में सशक्त बनाने के लक्ष्य की घोषणा की। इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए सामुदायिक संस्थानों को मजबूत करने की आवश्यकता को समझते हुए, सरकार ने नवंबर 2023 और मार्च 2024 के बीच सामुदायिक कैडरों के लिए संरचित प्रशिक्षण आयोजित किया। लगभग **5.5 लाख** व्यक्तियों ने यह प्रशिक्षण प्राप्त किया, जिसमें 15 घंटे में पढ़ाए जाने वाले 12 मॉड्यूल शामिल थे।

- **फरवरी 2024** में, अंतरिम बजट में **राष्ट्रीय लक्ष्य को बढ़ाकर तीन करोड़** लखपति दीदी कर दिया गया। इसी अवधि के दौरान Lakhpati Didi portal भी लॉन्च किया गया। **मई 2024** में, Digital Aajeevika Register ने प्रत्येक परिवार की आजीविका और आय को रिकॉर्ड करना शुरू किया। इस प्रक्रिया के तहत, LokOS platform प्लेटफॉर्म पर महिलाओं की पहचान 'संभावित लखपति दीदी' के रूप में की जाती है। **प्रशिक्षित सामुदायिक संसाधन व्यक्ति (CRPs)** व्यक्तिगत परिवारों के लिए व्यावसायिक योजनाएं करते हैं। इसके बाद परिवारों को कौशल, वित्त, संपत्ति और बाजार जैसे क्षेत्रों में समन्वित सहायता मिलती है। राष्ट्रीय और राज्य मिशन इसी रजिस्टर के माध्यम से प्रगति की निगरानी करते हैं। **अगस्त 2024 तक, एक करोड़ महिलाओं** ने लखपति दीदी का दर्जा हासिल कर लिया था।

- **जुलाई 2025** में **दीदी बिजनेस प्लान टूल** और CRPs के लिए एक **वित्तीय-साक्षरता एप्लिकेशन** की शुरुआत के साथ और अधिक डिजिटल हस्तक्षेप किए गए। **अगस्त 2025** में लखपति दीदी बनाने की दर्ज उपलब्धि बढ़कर **दो करोड़ महिलाओं** तक पहुंच गई। **दिसंबर 2025 तक**, इस पहल ने **समय से पहले ही** अपने **तीन करोड़ के लक्ष्य को हासिल** कर लिया था। इसके बाद, **फरवरी 2026** में, सरकार ने राष्ट्रीय लक्ष्य को संशोधित कर **मार्च 2029** तक **छह करोड़ लखपति दीदी** कर दिया।



पहचान और कार्यान्वयन फ्रेमवर्क

- यह पहल **समुदाय-नेतृत्व** वाली पहचान और कार्यान्वयन प्रक्रिया का पालन करती है। यह सभी सामाजिक और आर्थिक श्रेणियों की SHG सदस्यों को समान अवसर प्रदान करती है। परामर्श के माध्यम से संभावित लखपति दीदियों की पहचान की जाती है। **प्रशिक्षित सामुदायिक संसाधन व्यक्ति (CRPs)** इस प्रक्रिया को सुगम बनाते हैं। वे घरेलू आजीविका का आकलन करते हैं और अतिरिक्त आय के अवसरों की पहचान करने में महिलाओं की सहायता करते हैं। कार्यान्वयन रूपरेखा कई चरणों का पालन करती है:



- **पहचान:** SHG नेटवर्क और LokOS प्लेटफॉर्म के माध्यम से संभावित लाभार्थियों की पहचान की जाती है।
- **आय का आकलन:** घरेलू आजीविका, आय और व्यय का विवरण दर्ज किया जाता है। डिजिटल आजीविका रजिस्टर एक सामान्य निगरानी फ्रेमवर्क प्रदान करता है।
- **उद्यम नियोजन:** CRPs व्यक्तिगत व्यावसायिक योजनाएं तैयार करते हैं। सामान्य आवश्यकताओं और क्षेत्रीय अवसरों की पहचान करने के लिए इन योजनाओं को समेकित किया जाता है।
- **कार्यान्वयन सहायता:** महिलाओं को तीन वर्षों तक समन्वित सहायता प्राप्त होती है। इसमें प्रशिक्षण, वित्त, आजीविका संपत्ति और बाजार तक पहुंच शामिल है।
- **निगरानी:** राष्ट्रीय और राज्य मिशन डिजिटल रिकॉर्ड के माध्यम से प्रगति की समीक्षा करते हैं। राज्य मिशन दर्ज की गई उपलब्धियों का सत्यापन भी करते हैं।
- यह प्रक्रिया घरेलू स्तर की योजना को संस्थागत सहायता से जोड़ती है। यह स्थानीय आजीविका आवश्यकताओं के अनुरूप हस्तक्षेप करने की भी अनुमति देती है।

क्रियान्वयन में नेतृत्व : रणनीतिक योजना से कार्यान्वयन तक

- इस पहल का कार्यान्वयन नीति नियोजन, संस्थागत सुदृढ़ीकरण और सामुदायिक लामबंदी के **चरणबद्ध दृष्टिकोण** को दर्शाता है।
- इसकी नींव **21 अक्टूबर 2021** को रखी गई, जब सरकार ने राज्यों को एक परामर्श जारी किया। इसमें DAY-NRLM के तहत SHG परिवारों के बीच सतत और विविध कृषि तथा गैर-कृषि आजीविका को प्रोत्साहित किया गया। **29 दिसंबर 2021** को, सरकार ने राज्यों से **समयबद्ध लक्ष्य** निर्धारित करने का अनुरोध किया।
- इसके बाद, **10 जून 2022** के एक संवाद के माध्यम से घरेलू आय के अंतर की पहचान करने और लक्षित हस्तक्षेपों की योजना बनाने के लिए **साक्ष्य-आधारित** मोबाइल एप्लिकेशन-आधारित घरेलू आय **सर्वेक्षण** शुरू किया गया।
- **6 सितंबर 2023** को, सरकार ने एक राष्ट्रीय सम्मेलन आयोजित किया, जिसमें राज्य मिशनों, विकास भागीदारों और संबंधित मंत्रालयों ने भाग लिया। सरकार ने **दो करोड़ लखपति SHG दीदियों को सशक्त बनाने पर रणनीति नोट** जारी किया। इस रणनीति ने मौजूदा DAY-NRLM नेटवर्क का लाभ उठाते हुए एक संस्थागत दृष्टिकोण अपनाया। इस रूपरेखा में **चार महत्वपूर्ण बातों को मान्यता दी** गई: व्यवहार्य आजीविका और पुनर्भुगतान क्षमता का समर्थन करने के लिए अतिरिक्त ऋण की आवश्यकता; घरेलू आय के लिए एक सुसंगत मापन फ्रेमवर्क की आवश्यकता; राज्यों की अलग-अलग क्षमताओं के अनुरूप संदर्भ-विशिष्ट सहायता; और घरेलू स्तर की योजनाएं तैयार करने के लिए सामुदायिक संस्थानों को पर्याप्त प्रशिक्षण। इन बिंदुओं को **10 अक्टूबर 2023** को प्रधानमंत्री के समक्ष प्रस्तुत किया गया। इसके बाद ग्रामीण विकास मंत्रालय ने प्रधानमंत्री कार्यालय को एक **विस्तृत कार्य योजना** सौंपी और **16 अक्टूबर 2023** को **कार्यान्वयन कार्य बिंदु** जारी किए।
- राज्यों के साथ परामर्श में **12 प्राथमिकता वाले आजीविका उप-क्षेत्रों** की भी पहचान की गई। इनमें बांस, शहद, बकरी पालन, मुर्गी पालन और टसर रेशम शामिल थे।
- **2024** के दौरान, इस पहल को राष्ट्रीय संबोधनों और प्रत्यक्ष संवादों के माध्यम से **निरंतर नेतृत्व का ध्यान** प्राप्त हुआ। प्रधानमंत्री ने **मन की बात** और अन्य राष्ट्रीय संबोधनों में इसका उल्लेख किया। उन्होंने **SHG महिलाओं, ड्रोन ऑपरेटरों और उद्यमियों के साथ बातचीत** भी की। **जुलाई 2024** में प्रदर्शन समीक्षा समिति की बैठक हुई। सरकार ने 2024-25 के दौरान गुवाहाटी, श्रीनगर, जयपुर, हैदराबाद, बेंगलुरु और रायपुर में **क्षेत्रीय परामर्श** भी आयोजित किए। इन आयोजनों ने राज्य मिशनों के साथ संवाद को सुगम बनाया और कार्यान्वयन की प्रगति पर चर्चा को सक्षम किया।
- **जनवरी 2025** में, कर्तव्य पथ पर **गणतंत्र दिवस परेड** में **लखपति दीदी की एक झांकी** प्रदर्शित की गई। सरकार ने **फरवरी-मार्च 2025** के दौरान रिफ्रेशर प्रशिक्षण आयोजित किया। **मार्च 2025** में, **कृषि, पशुपालन** और **MSME** विभागों के साथ चर्चा शुरू की गई। ये चर्चाएं उनकी संबंधित योजनाओं के बीच तालमेल पर केंद्रित थीं। सरकार ने **अक्टूबर 2025** में एक लर्निंग पोर्टल और चैटबॉट भी लॉन्च किया।
- सरकार ने **2025-26** के दौरान **डेटा गवर्नेंस** को भी मजबूत किया। असामान्य आय प्रविष्टियों की पहचान करने के लिए जांच प्रणाली शुरू की गई। राज्य मिशनों से विसंगतियों को दूर करने और दर्ज आंकड़ों को प्रमाणित करने के लिए कहा गया। इससे **प्रगति आकलन की विश्वसनीयता को मजबूत करने में मदद** मिली। 2026 में, डिजिटल और संस्थागत हस्तक्षेपों के माध्यम से कार्यान्वयन सहायता का और विस्तार हुआ। **21 फरवरी 2026** को **व्यक्तिगत उद्यम ऋण** के लिए एक एप्लिकेशन लॉन्च किया गया। **मई 2026** में **LokOS का एक उन्नत संस्करण** जारी किया गया। गया और पुष्कर में क्षेत्रीय कार्यशालाएं आयोजित की गईं। **28-29 जून 2026** को **राष्ट्रीय ग्रामीण विकास सम्मेलन** के दौरान सभी राज्यों की समीक्षा की गई। 29 जून 2026 को उत्पादक समूहों और उद्यमों के लिए एक प्लेटफॉर्म और एक सार्वजनिक Lakhpati Didi dashboard भी लॉन्च किया गया।

- कुल मिलाकर, कार्यान्वयन दृष्टिकोण **लक्ष्य-निर्धारण से परे नेतृत्व के महत्व** को प्रदर्शित करता है। सरकार ने साक्ष्य-आधारित योजना को संस्थागत क्षमता निर्माण के साथ जोड़ा। इसने मौजूदा सामुदायिक नेटवर्क का लाभ उठाया और अंतर-विभागीय तालमेल को बढ़ावा दिया। नियमित समीक्षाओं, डिजिटल उपकरणों और डेटा सत्यापन ने निगरानी और जवाबदेही को मजबूत किया। इस संयोजन ने एक राष्ट्रीय स्तर पर समन्वित पहल को विकेंद्रीकृत, समुदाय-नेतृत्व वाले संस्थानों के माध्यम से कार्य करने में सक्षम बनाया।

महिला-नेतृत्व वाली ग्रामीण समृद्धि का निर्माण

- लखपति दीदी पहल महिलाओं पर केंद्रित ग्रामीण आजीविका विकास के एक दृष्टिकोण का प्रतिनिधित्व करती है। यह मौजूदा सामुदायिक संस्थानों को उद्यम नियोजन और वित्तीय सहायता के साथ जोड़ती है। इसका ध्यान केवल घरेलू आय बढ़ाने से कहीं आगे तक फैला हुआ है। यह विविध आजीविका, उद्यमिता और सामुदायिक नेतृत्व को भी बढ़ावा देती है। महिलाओं को सक्रिय आर्थिक योगदानकर्ता बनने के लिए सशक्त बनाकर, यह पहल ग्रामीण परिवारों को मजबूत करने का प्रयास करती है। यह व्यापक ग्रामीण आर्थिक विकास के लिए भी मार्ग प्रशस्त करती है।

प्रारंभिक परीक्षा (Prelims) के लिए अभ्यास प्रश्न

प्रश्न: 'लखपति दीदी पहल' के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. इसे दीनदयाल अंत्योदय योजना-राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन (DAY-NRLM) के तहत लागू किया जा रहा है।
2. इस पहल का उद्देश्य ग्रामीण महिलाओं को वित्तीय पहुंच, कौशल और बाजार के अवसर प्रदान करके स्वयं सहायता समूह (SHG) नेटवर्क का लाभ उठाना है।
3. इस पहल के तहत मार्च 2029 तक 6 करोड़ लखपति दीदियों को सशक्त बनाने का लक्ष्य रखा गया है।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?

- (A) केवल 1 और 2
- (B) केवल 2 और 3
- (C) केवल 1 और 3
- (D) 1, 2 और 3

मुख्य परीक्षा (Mains) के लिए अभ्यास प्रश्न

- **"ग्रामीण क्षेत्रों में महिला-नेतृत्व वाली उद्यमिता और सतत घरेलू आय को बढ़ावा देने में 'लखपति दीदी पहल' की भूमिका का परीक्षण कीजिए। साथ ही, इसके लक्ष्यों और ग्रामीण आजीविका पर इसके प्रभावों का विश्लेषण करें।"**
- *(शब्द सीमा: 250 शब्द)*

पत्र सूचना कार्यालय
सूचना और प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार

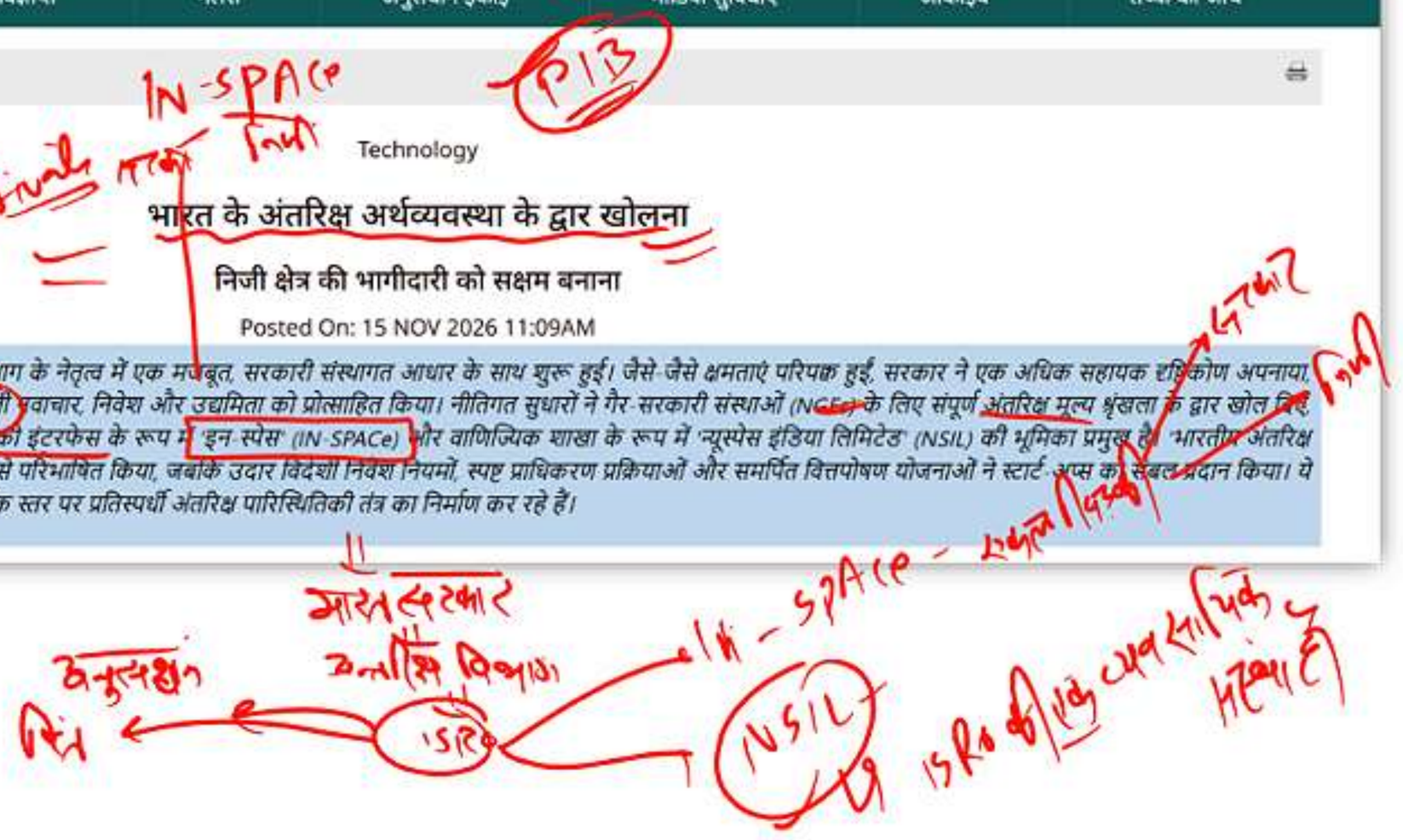
Technology

भारत के अंतरिक्ष अर्थव्यवस्था के द्वार खोलना

निजी क्षेत्र की भागीदारी को सक्षम बनाना

Posted On: 15 NOV 2026 11:09AM

भारत की अंतरिक्ष यात्रा इसरो (ISRO) और अंतरिक्ष विभाग के नेतृत्व में एक मजबूत, सरकारी संस्थागत आधार के साथ शुरू हुई। जैसे-जैसे क्षमताएं परिपक्व हुईं, सरकार ने एक अधिक सहायक दृष्टिकोण अपनाया, जिसने सार्वजनिक क्षेत्र के नेतृत्व को बनाए रखते हुए निजी सदाचार, निवेश और उद्यमिता को प्रोत्साहित किया। नीतिगत सुधारों ने गैर-सरकारी संस्थाओं (NGEs) के लिए संपूर्ण अंतरिक्ष मूल्य श्रृंखला के द्वार खोल दिए, जिसमें सरकार और निजी संस्थाओं के बीच एकल-खिड़की इंटरफेस के रूप में 'इन-स्पेस' (IN-SPACe) और वाणिज्यिक शाखा के रूप में 'न्यूस्पेस इंडिया लिमिटेड' (NSIL) की भूमिका प्रमुख है। 'भारतीय अंतरिक्ष नीति 2023' ने प्रत्येक संस्थान की भूमिका को स्पष्ट रूप से परिभाषित किया, जबकि उदार विदेशी निवेश नियमों, स्पष्ट प्राधिकरण प्रक्रियाओं और समर्पित वित्तपोषण योजनाओं ने स्टार्ट-अप्स को सबल प्रदान किया। ये कदम निरंतर एक सहयोगी, उद्योग-नेतृत्व वाले और वैश्विक स्तर पर प्रतिस्पर्धी अंतरिक्ष पारिस्थितिकी तंत्र का निर्माण कर रहे हैं।



यह सब कहां से शुरू हुआ – सरकारी नींव से से वैश्विक नेतृत्व तक

- पिछले एक दशक में भारत की अंतरिक्ष यात्रा में उल्लेखनीय बदलाव आया है। यह अग्रणी वैज्ञानिक अनुसंधान से विकसित होकर वैश्विक स्तर पर प्रतिस्पर्धी अंतरिक्ष कार्यक्रम बन गई है। यह प्रगति निरंतर राष्ट्रीय महत्वाकांक्षा, संस्थागत दूरदर्शिता और स्वदेशी तकनीकी नवाचार को दर्शाती है। आज भारत एक अधिक व्यावसायिक रूप से गतिशील अंतरिक्ष क्षेत्र की दिशा में आगे बढ़ रहा है। निजी क्षेत्र की बढ़ती भागीदारी से इसकी औद्योगिक और तकनीकी क्षमताओं का और विस्तार हो रहा है।

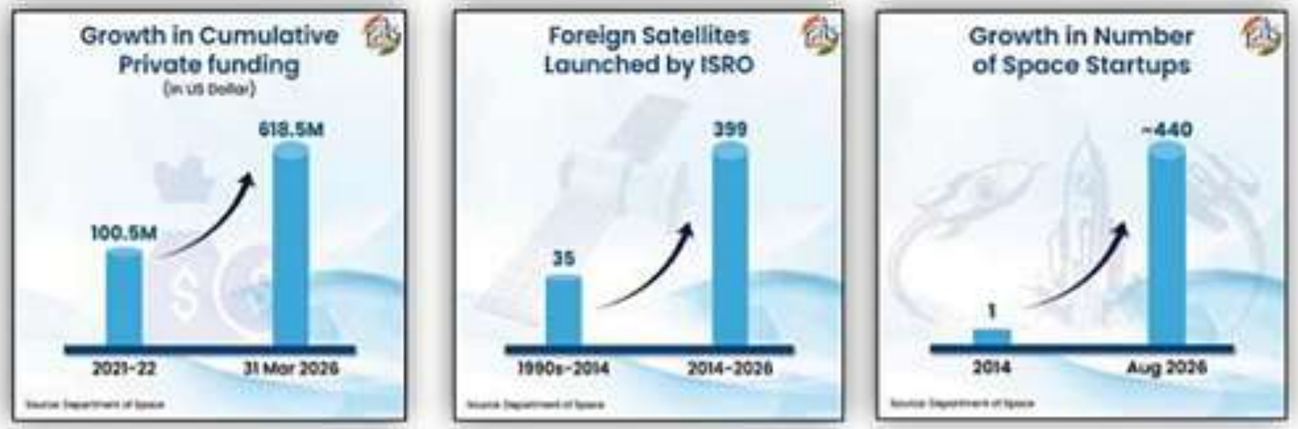
- इस यात्रा की नींव एक मजबूत संस्थागत ढांचे के माध्यम से रखी गई थी। भारतीय **राष्ट्रीय अंतरिक्ष अनुसंधान समिति (INCOSPAR)** की स्थापना वर्ष 1962 में की गई थी। यह परमाणु ऊर्जा विभाग के अधीन कार्य करती थी और भारत की शुरुआती अंतरिक्ष अनुसंधान पहलों का नेतृत्व करती थी। इसके बाद, अगस्त 1969 में **भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (ISRO)** की स्थापना की गई, जिसने INCOSPAR का स्थान लिया। जून 1972 में सरकार ने **अंतरिक्ष आयोग** का गठन किया और **अंतरिक्ष विभाग (DoS)** की स्थापना की। सितंबर 1972 में इसरो को अंतरिक्ष विभाग के अधीन कर दिया गया।

- जैसे-जैसे भारत की अंतरिक्ष क्षमताओं का विकास हुआ, सरकार ने व्यापक संस्थागत भागीदारी की आवश्यकता को पहचाना। इसके लिए मुख्य रूप से सरकार के नेतृत्व वाले संचालन ढांचे से आगे बढ़ना आवश्यक था। इसी के अनुरूप, सरकार ने अंतरिक्ष क्षेत्र के प्रशासन के लिए अधिक सुविधाजनक और परिणामोन्मुखी दृष्टिकोण अपनाया। इस दृष्टिकोण में सार्वजनिक क्षेत्र के नेतृत्व को बनाए रखते हुए निजी नवाचार, निवेश और उद्यमिता को प्रोत्साहित किया गया।

- इस दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम 24 जून 2020 को उठाया गया। **केंद्रीय मंत्रिमंडल ने अंतरिक्ष गतिविधियों में निजी क्षेत्र की अधिक भागीदारी को सक्षम बनाने वाले सुधारों को मंजूरी दी।** इन सुधारों ने सार्वजनिक और निजी क्षेत्र के सहयोग पर आधारित मॉडल की दिशा में एक महत्वपूर्ण बदलाव किया। साथ ही, इन्होंने अधिक प्रतिस्पर्धी और व्यावसायिक रूप से संचालित अंतरिक्ष क्षेत्र की नींव रखी। इन सुधारों ने भारत की अंतरिक्ष गतिविधियों को नियंत्रित करने वाले संस्थागत ढांचे को नए सिरे से परिभाषित किया। इसके माध्यम से निजी क्षेत्र को राष्ट्रीय क्षमताओं, व्यावसायिक अवसरों और वैश्विक प्रतिस्पर्धात्मकता को आगे बढ़ाने में एक सक्रिय भागीदार के रूप में स्थापित किया गया।

प्रमुख संकेतक

- **भारत के अंतरिक्ष क्षेत्र में बदलाव के व्यापक स्तर को दर्शाते हुए**
- **अंतरिक्ष अर्थव्यवस्था में वृद्धि:** अगस्त 2026 में भारत की अंतरिक्ष अर्थव्यवस्था का अनुमान लगभग 9 अरब अमेरिकी डॉलर लगाया गया, जबकि वर्ष 2023 में यह लगभग 8.4 अरब अमेरिकी डॉलर (वैश्विक अंतरिक्ष अर्थव्यवस्था का लगभग 2 प्रतिशत) थी।
  स्टार्टअप की वृद्धि: पंजीकृत अंतरिक्ष स्टार्टअप की संख्या वर्ष 2014 में एक थी, जो अगस्त 2026 में बढ़कर लगभग 440 हो गई।
- **निजी निवेश:** भारतीय अंतरिक्ष स्टार्टअप में कुल निवेश वर्ष 2021-22 में 10.05 करोड़ अमेरिकी डॉलर से बढ़कर 31 मार्च 2026 तक 61.85 करोड़ अमेरिकी डॉलर हो गया।



- **वाणिज्यिक प्रक्षेपण:** इसरो ने वर्ष 1990 से 2014 के बीच 35 विदेशी उपग्रहों की तुलना में वर्ष 2014 से जनवरी 2026 के बीच 399 विदेशी उपग्रहों का प्रक्षेपण किया।
- **प्रत्यक्ष विदेशी निवेश:** वर्ष 2026 के मध्य तक सरकार को अंतरिक्ष क्षेत्र के लिए 1,745.40 करोड़ रुपये के 11 प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (FDI) प्रस्ताव प्राप्त हुए।
- **अंतरराष्ट्रीय सहयोग:** जून 2026 तक, भारत की वैश्विक साझेदारियों का विस्तार 61 देशों और पांच बहुपक्षीय संगठनों के साथ अंतरिक्ष सहयोग से जुड़े 300 से अधिक समझौतों तक हो गया।

सहयोगात्मक शासन: भारत के अंतरिक्ष क्षेत्र का बाजारीकरण (2020-2026)

- भारत की अंतरिक्ष क्षमताओं के विस्तार और वैश्विक अंतरिक्ष अर्थव्यवस्था में उसकी स्थिति को मजबूत करने में निजी उद्यमों की संभावनाओं को ध्यान में रखते हुए, भारत सरकार ने **24 जून 2020** को अंतरिक्ष क्षेत्र में बड़े सुधारों की घोषणा की। भारत के अंतरिक्ष कार्यक्रम के विस्तार से बढ़ते वैश्विक वाणिज्यिक अंतरिक्ष बाजार का लाभ उठाने और औद्योगिक भागीदारी को बढ़ावा देने का अवसर भी मिला।

सुधारों को मंत्रिमंडल की मंजूरी और IN-SPACe का गठन (जून 2020–नवंबर 2022)

- इन सुधारों के तहत **गैर-सरकारी संस्थाओं (NGEs)** को अंतरिक्ष क्षेत्र की पूरी मूल्य श्रृंखला में भागीदारी करने में सक्षम बनाया गया। उनकी भूमिका केवल कलपुर्जों की आपूर्ति और सेवाएं प्रदान करने तक सीमित नहीं रही।
- मंत्रिमंडल की मंजूरी के साथ ही **भारतीय राष्ट्रीय अंतरिक्ष संवर्धन एवं प्राधिकरण केंद्र (IN-SPACe)** की स्थापना एक स्वायत्त एजेंसी के रूप में की गई। यह अंतरिक्ष विभाग (DoS) के अधीन कार्य करता है और निजी उद्यमों को नियामकीय मंजूरी प्रदान करने के लिए **एकल खिड़की संपर्क केंद्र** के रूप में काम करता है। इसके दायित्वों में निजी क्षेत्र की भागीदारी को बढ़ावा देना, अंतरिक्ष गतिविधियों को प्राधिकृत करना और उनकी निगरानी करना तथा सुरक्षा संबंधी विचारों और परिचालन प्राथमिकताओं को ध्यान में रखते हुए इसरो की सुविधाओं तक पहुंच उपलब्ध कराना शामिल है। इसके कार्यक्षेत्र में मिशन की सुरक्षा, प्रक्षेपण की तैयारी, कक्षा और आवृत्ति का समन्वय, अंतरिक्ष यान का पंजीकरण तथा सुरक्षा संबंधी आवश्यकताएं भी शामिल हैं।
- **न्यू स्पेस इंडिया लिमिटेड (NSIL)** की स्थापना मार्च 2019 में अंतरिक्ष विभाग की वाणिज्यिक शाखा के रूप में की गई थी। बाद में सार्वजनिक धन से विकसित प्रौद्योगिकियों के व्यावसायीकरण के लिए इसके दायित्वों का विस्तार किया गया। एनएसआईएल को सरकार और अन्य ग्राहकों की मांग को एकत्रित करने की जिम्मेदारी भी सौंपी गई। इसके अलावा, इसे घरेलू और अंतरराष्ट्रीय बाजारों में इन प्रौद्योगिकियों और सेवाओं के विपणन तथा बिक्री का कार्य भी सौंपा गया। इस बीच, निजी क्षेत्र की अंतरिक्ष गतिविधियां लागू लाइसेंसिंग, सुरक्षा और संरक्षा संबंधी आवश्यकताओं के अधीन बनी रहीं।
- इस संस्थागत ढांचे को और मजबूत करने के लिए **भारतीय अंतरिक्ष संघ (ISpA)** का शुभारंभ अक्टूबर 2021 में किया गया। यह सरकार के साथ संवाद स्थापित करने और भारत के अंतरिक्ष क्षेत्र के विकास में सहयोग देने के लिए उद्योग जगत को एक मंच प्रदान करता है।

IN-SPACe और NSIL ने मापनीय परिणाम दिए

- वित्त वर्ष 2021-22 में NSIL का राजस्व 321.77 करोड़ रुपये था, जो वित्त वर्ष 2024-25 में बढ़कर 3,000 करोड़ रुपये से अधिक हो गया।
- NSIL ने 83 इसरो प्रौद्योगिकियों को शामिल करते हुए प्रौद्योगिकी हस्तांतरण के 118 समझौतों पर हस्ताक्षर किए।
- 31 जनवरी 2026 तक, IN-SPACe ने उद्योग जगत और स्टार्टअप को 71 प्रौद्योगिकियों के हस्तांतरण में सहायता प्रदान की थी।
- वर्ष 2026 के मध्य तक, IN-SPACe ने 52 गैर-सरकारी संस्थाओं (NGEs) को 113 प्राधिकरण प्रदान किए थे, जिनमें 18 स्टार्टअप शामिल थे।
- छह भारतीय गैर-सरकारी संस्थाओं ने 18 उपग्रहों का प्रक्षेपण किया, जबकि 25 पेलोड को POEM (पीएसएलवी ऑर्बिटल एक्सपेरिमेंटल मॉड्यूल) प्लेटफॉर्म पर भेजा गया या भेजे जाने के लिए निर्धारित किया गया।

भारतीय अंतरिक्ष नीति 2023 के माध्यम से भूमिकाओं और जिम्मेदारियों का निर्धारण

- **भारतीय अंतरिक्ष नीति 2023** ने अंतरिक्ष क्षेत्र के प्रमुख संस्थानों की भूमिकाओं और जिम्मेदारियों को स्पष्ट रूप से परिभाषित किया। इसने अंतरिक्ष क्षेत्र में समन्वित भागीदारी के लिए एक रूपरेखा तैयार की।
- इस नीति के तहत, **इसरो** उन्नत अनुसंधान, उभरती प्रौद्योगिकियों और राष्ट्रीय मिशनों पर ध्यान केंद्रित करेगा। परिपक्व परिचालन प्रणालियों को विनिर्माण और वाणिज्यिक उत्पादन के लिए उद्योग जगत को हस्तांतरित किया जाएगा।
- इस नीति ने सुधारों को मंत्रिमंडल की मंजूरी वाले खंड में उल्लिखित IN-SPACe और NSIL की संबंधित भूमिकाओं को भी औपचारिक रूप दिया। इसने निजी क्षेत्र की गतिविधियों को बढ़ावा देने और उन्हें प्राधिकृत करने में IN-SPACe की भूमिका को और मजबूत किया। साथ ही, अंतरिक्ष प्रौद्योगिकियों और सेवाओं के व्यावसायीकरण के लिए NSIL के दायित्वों को भी सुदृढ़ किया।
- इसके अतिरिक्त, भारतीय अंतरिक्ष नीति 2023 ने निजी उद्यमों (गैर-सरकारी संस्थाओं यानी NGEs) को अंतरिक्ष से जुड़ी गतिविधियों को शुरू से अंत तक संचालित करने में सक्षम बनाया। इनमें उपग्रह निर्माण, प्रक्षेपण यान का विकास और अंतरिक्ष-आधारित सेवाएं शामिल हैं।

अंतरिक्ष क्षेत्र के लिए उदार प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (FDI) नीति (फरवरी 2024)

- लंबे समय तक, उपग्रहों की स्थापना और संचालन के क्षेत्र में प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (FDI) की अनुमति केवल सरकारी मंजूरी के माध्यम से ही दी जाती थी। इस प्रक्रिया को उदार बनाना अंतरिक्ष क्षेत्र में निजी भागीदारी को बढ़ावा देने के लिए किए गए प्रमुख नीतिगत सुधारों में से एक था। केंद्रीय मंत्रिमंडल ने **21 फरवरी 2024 को अंतरिक्ष क्षेत्र के लिए प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (FDI) नीति में संशोधनों को मंजूरी दी।** संशोधित प्रावधान **16 अप्रैल 2024 से प्रभावी हुए,** जिसके तहत निर्धारित सीमाओं के भीतर स्वचालित मार्ग से विदेशी निवेश की अनुमति दी गई।
- स्वचालित मार्ग के तहत, उपग्रह निर्माण और संचालन, उपग्रह डेटा उत्पादों तथा भू-आधारित और उपयोगकर्ता खंडों में 74 प्रतिशत तक प्रत्यक्ष विदेशी निवेश की अनुमति दी गई है।
- प्रक्षेपण यानों और अंतरिक्ष बंदरगाहों के क्षेत्र में 49 प्रतिशत तक तथा कलपुर्जों और उप-प्रणालियों के क्षेत्र में 100 प्रतिशत तक विदेशी निवेश की अनुमति दी गई है।
- निर्धारित सीमाओं से अधिक निवेश के लिए सरकारी मंजूरी लेना आवश्यक था।

अंतरिक्ष गतिविधियों के प्राधिकरण के लिए मानदंड, दिशानिर्देश और प्रक्रियाएं (NGP) (मई 2024)

- IN-SPACe ने भारतीय अंतरिक्ष नीति 2023 को व्यवहार में लागू करने के लिए 3 मई 2024 को मानदंड, दिशानिर्देश और प्रक्रियाएं (NGP) जारी कीं। NGP में बताया गया है कि किन अंतरिक्ष गतिविधियों के लिए IN-SPACe का प्राधिकरण आवश्यक है, इसे प्रदान करने के लिए कौन-से मानदंड निर्धारित किए गए हैं और आवेदकों को किन शर्तों का पालन करना होगा। भारतीय क्षेत्र से या भारतीय क्षेत्र में की जाने वाली अथवा भारत के अधिकार क्षेत्र के अंतर्गत आने वाली अंतरिक्ष गतिविधियों को संचालित करने वाली किसी भी संस्था के लिए यह प्राधिकरण प्राप्त करना आवश्यक है।

हर चरण के लिए पूंजी: अंतरिक्ष स्टार्टअप के लिए IN-SPACe की फंडिंग स्कीम

- **पूर्व-इनक्यूबेशन उद्यमिता (PIE)** – वर्ष 2024 में शुरू किया गया पूर्व-इनक्यूबेशन उद्यमिता (PIE) कार्यक्रम 21 महीने का कार्यक्रम है, जिसमें तीन चरण शामिल हैं: **विचार निर्माण, नवाचार और प्रोटोटाइप प्रदर्शन।** इसका उद्देश्य शुरुआती चरण के स्टार्टअप को अपने विचारों को प्रोटोटाइप में बदलने में सहायता करना है। इसके साथ ही, उद्यमियों और उनसे जुड़े व्यावसायिक कौशल का विकास करना भी इसका लक्ष्य है।

- **IN-SPACe सीड फंड योजना** – वर्ष 2023 में शुरू की गई यह सीड फंड योजना शुरुआती चरण के अंतरिक्ष स्टार्टअप (1 जुलाई 2022 या उसके बाद स्थापित स्टार्टअप) को सहायता प्रदान करती है। इस योजना के माध्यम से इन स्टार्टअप को अपने नए विचारों का प्रदर्शन करने और विकास के अगले स्तर तक पहुंचने में मदद मिलती है। चयनित स्टार्टअप को निर्धारित उपलब्धियों के आधार पर तीन या उससे अधिक किस्तों में अधिकतम **1 करोड़ रुपये का अनुदान** प्रदान किया जाता है।

- **प्रौद्योगिकी अपनाने के लिए निधि (TAF)** – जब कोई विचार सफलतापूर्वक काम करने लगता है, तो अगली चुनौती उसे एक उत्पाद में बदलने की होती है। इसी दिशा में फरवरी 2025 में **500 करोड़ रुपये के कुल बजटीय प्रावधान** के साथ प्रौद्योगिकी अपनाने के लिए निधि (TAF) की स्थापना की गई। इसका उद्देश्य अंतरिक्ष क्षेत्र में उन्नत प्रौद्योगिकियों के नवाचार और व्यावसायीकरण को बढ़ावा देना है। यह निधि गैर-सरकारी संस्थाओं (NGEs) को आंशिक वित्तीय सहायता प्रदान करती है। इससे शुरुआती चरण की प्रौद्योगिकियों को व्यावसायिक रूप से उपयोगी उत्पादों में बदलने में मदद मिलती है। स्टार्टअप और सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम (MSMEs) को परियोजना लागत का 60 प्रतिशत तक, जबकि बड़े उद्योगों को 40 प्रतिशत तक वित्तीय सहायता मिल सकती है। हालांकि, **प्रति परियोजना वित्तीय सहायता की अधिकतम सीमा 25 करोड़ रुपये निर्धारित की गई है।**

- **वेंचर कैपिटल फंड** – जैसे-जैसे स्टार्टअप का विकास होता है, उन्हें अपने विस्तार के लिए अधिक पूंजी की आवश्यकता होती है। वर्ष 2024 में केंद्रीय मंत्रिमंडल ने IN-SPACe के तत्वावधान में **1,000 करोड़ रुपये का वेंचर कैपिटल फंड** स्थापित करने की मंजूरी दी। इस निधि के तहत प्रत्येक कंपनी में उसके विकास के चरण, विकास की संभावनाओं और राष्ट्रीय अंतरिक्ष क्षमताओं पर पड़ने वाले संभावित प्रभाव के आधार पर 10 से 60 करोड़ रुपये तक के निवेश का प्रस्ताव है। विकास के चरण वाली कंपनियों के लिए 10 से 30 करोड़ रुपये और विकास के अंतिम चरण वाली कंपनियों के लिए 30 से 60 करोड़ रुपये तक के इक्विटी निवेश का प्रावधान किया गया है।

अंतरिक्ष क्षेत्र के बाजारीकरण से प्राप्त प्रमुख परिणाम

स्काईरूट एयरोस्पेस का विक्रम-एस

- इन सुधारों ने निजी उद्यमों के लिए प्रक्षेपण गतिविधियों के क्षेत्र को खोल दिया है और प्रत्येक उपलब्धि इस बदलाव के परिणामों को दर्शाती है। निजी क्षेत्र की बढ़ती भागीदारी के बाद नवंबर 2022 में इस दिशा में पहली बड़ी उपलब्धि हासिल हुई। हैदराबाद स्थित **स्काईरूट एयरोस्पेस (Skyroot Aerospace)** ने **विक्रम-एस (Vikram-S)** का सफल प्रक्षेपण किया। यह भारत का **पहला निजी तौर पर विकसित रॉकेट और IN-SPACe द्वारा अधिकृत देश का पहला निजी प्रक्षेपण** था। **मिशन प्रारंभ** के तहत प्रक्षेपित विक्रम-एस अपने साथ तीन ग्राहक पेलोड लेकर गया था। इनमें ऐसे सेंसर लगे थे, जिनका उद्देश्य भविष्य के कक्षीय मिशनों के लिए प्रक्षेपण से जुड़ी महत्वपूर्ण प्रौद्योगिकियों की पुष्टि करना था।

अग्निकुल कॉसमॉस

- मई 2024 में अग्निकुल कॉसमॉस भारत की पहली निजी प्रक्षेपण सुविधा, श्रीहरिकोटा स्थित धनुष (Dhanush) से रॉकेट प्रक्षेपित करने वाली पहली गैर-सरकारी संस्था (NGE) बनी। इस मिशन में दुनिया के **पहले एकल-खंड में 3डी प्रिंट किए गए अर्ध-क्रायोजेनिक रॉकेट इंजन** का भी प्रदर्शन किया गया। यह स्वदेशी रॉकेट निर्माण और प्रणोदन प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में हुई प्रगति को दर्शाता है।

स्काईरूट एयरोस्पेस का विक्रम-I

- 18 जुलाई 2026 को स्काईरूट एयरोस्पेस के **लघु उपग्रह प्रक्षेपण यान विक्रम-I (Vikram-I)** ने अपनी पहली उड़ान में सफलतापूर्वक कक्षा में प्रवेश किया। मिशन आगमन (Mission Aagaman) के नाम से जाने जाने वाले इस मिशन के साथ पहली बार किसी भारतीय निजी कंपनी ने भारतीय धरती से रॉकेट का कक्षीय प्रक्षेपण किया। यह उपलब्धि अंतरिक्ष क्षेत्र में किए गए सुधारों के तहत निजी क्षेत्र की भागीदारी से संभव हुई।

PSLV और SSLV: इसरो के प्रक्षेपण यानों का निर्माण अब उद्योग जगत द्वारा

- उद्योग जगत के नेतृत्व में उत्पादन की दिशा में बढ़ना अंतरिक्ष क्षेत्र में किए गए सुधारों का एक महत्वपूर्ण परिणाम है। दशकों तक इसरो भारत के प्रक्षेपण यानों के डिजाइन और विकास का नेतृत्व करता रहा, जबकि भारतीय उद्योग जगत कलपुर्जों और सेवाओं की आपूर्ति करता था। अब अंतरिक्ष क्षेत्र में किए गए सुधारों ने संपूर्ण औद्योगिक उत्पादन का मार्ग खोल दिया है। **5 सितंबर 2022 को NSIL ने हिंदुस्तान एयरोनॉटिक्स लिमिटेड (HAL) के साथ एक अनुबंध पर हस्ताक्षर किए।** HAL, HAL–L&T कंसोर्टियम का प्रमुख सदस्य है। यह अनुबंध **पांच PSLV-XL (ध्रुवीय उपग्रह प्रक्षेपण यान)** के उत्पादन से संबंधित था।
- इसके अतिरिक्त, **10 सितंबर 2025 को NSIL, ISRO, IN-SPACe और HAL ने SSLV (लघु उपग्रह प्रक्षेपण यान) प्रौद्योगिकी हस्तांतरण समझौते पर हस्ताक्षर किए।** इसके तहत औद्योगिक उत्पादन के लिए SSLV की प्रौद्योगिकी HAL को हस्तांतरित की गई। इससे घरेलू विनिर्माण को मजबूती मिली, उद्योग जगत की भागीदारी का विस्तार हुआ और सार्वजनिक-निजी भागीदारी (PPP) और अधिक सुदृढ़ हुई।

विकसित भारत 2047 की दिशा में भारत का अंतरिक्ष क्षेत्र

- भारत की अंतरिक्ष यात्रा दर्शाती है कि स्पष्ट नीतियां, संस्थागत विश्वास और उद्यमशील युवाओं की क्षमता किस प्रकार महत्वाकांक्षा को उपलब्धियों में बदल सकती है। उद्योग जगत की अगुवाई में बढ़ती भागीदारी के साथ, **सरकार का अनुमान है कि भारत की अंतरिक्ष अर्थव्यवस्था वर्ष 2033 तक बढ़कर लगभग 44 अरब अमेरिकी डॉलर हो जाएगी, जो वैश्विक अंतरिक्ष अर्थव्यवस्था का लगभग 8 प्रतिशत होगी।** इसके वर्ष 2040 तक बढ़कर **100 अरब अमेरिकी डॉलर** होने का अनुमान है। विकसित भारत 2047 की दिशा में आगे बढ़ते हुए, स्टार्टअप और सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम (MSMEs), इसरो (ISRO), एनएसआईएल (NSIL) और IN-SPACe के साथ मिलकर नई क्षमताओं का निर्माण करेंगे, कुशल रोजगार के अवसर पैदा करेंगे और युवा प्रतिभाओं को विकसित करेंगे। निरंतर सहयोग और कौशल विकास के साथ यह साझेदारी आत्मनिर्भर भारत, मेक इन इंडिया और स्टार्टअप इंडिया की भावना को प्रतिबिंबित करती है।

प्रारंभिक परीक्षा (Prelims) के लिए अभ्यास प्रश्न

प्रश्न 1: निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. भारत की अंतरिक्ष यात्रा की शुरुआत मुख्य रूप से इसरो (ISRO) और अंतरिक्ष विभाग के नेतृत्व में एक सरकारी संस्थागत आधार के साथ हुई थी।
2. 'न्यूस्पेस इंडिया लिमिटेड' (NSIL) की मुख्य भूमिका सरकार और निजी संस्थाओं के बीच एक एकल-खिड़की इंटरफ़ेस के रूप में कार्य करना है।
3. हालिया नीतिगत सुधारों ने गैर-सरकारी संस्थाओं (NGEs) के लिए संपूर्ण अंतरिक्ष मूल्य श्रृंखला के द्वार खोल दिए हैं।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?

- (A) केवल 1 और 3
- (B) केवल 2 और 3
- (C) केवल 1 और 2
- (D) 1, 2 और 3

मुख्य परीक्षा (Mains) के लिए अभ्यास प्रश्न

- **"भारत के अंतरिक्ष क्षेत्र में 'सार्वजनिक-निजी सहयोग' (Public-Private Partnership) अंतरिक्ष अर्थव्यवस्था को नई ऊंचाइयां दे रहा है। इस संदर्भ में अंतरिक्ष सुधारों, उदार विदेशी निवेश नियमों और स्टार्टअप्स के लिए बनाए गए पारिस्थितिकी तंत्र के महत्व का मूल्यांकन कीजिए।"**
- *(शब्द सीमा: 250 शब्द)*

पत्र सूचना कार्यालय
सूचना और प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार

Social Welfare

युग युगीन भारत संग्रहालय

भावी पीढ़ियों के लिए भारत की सभ्यतागत विरासत का संरक्षण

Posted On: 15 NOV 2026 10:27AM

युगे युगीन भारतः विभिन्न युगों का एक संग्रहालय



भारत की 5,000 वर्षों से अधिक पुरानी सभ्यतागत विरासत कला, स्थापत्य कला, ज्ञान प्रणालियों, परंपराओं और सांस्कृतिक प्रथाओं की एक समृद्ध धरोहर को दर्शाती है। यह धरोहर सदियों के दौरान विकसित हुआ है। इस विरासत को संरक्षित एवं प्रस्तुत करने हेतु, **नई दिल्ली** के ऐतिहासिक नॉर्थ और साउथ ब्लॉक परिसर में **'युगे युगीन भारत संग्रहालय'** को एक प्रमुख राष्ट्रीय सांस्कृतिक संस्थान के रूप में विकसित किया जा रहा है। इसे 'जनता के संग्रहालय' के रूप में परिकल्पित किया गया है और यह भारत की सभ्यतागत यात्रा की निरंतरता, विविधता और समृद्धि को इसकी मूर्त एवं अमूर्त सांस्कृतिक विरासत की एक समन्वित प्रस्तुति के माध्यम से प्रदर्शित करेगा।



- प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी द्वारा **18 मई 2023** को घोषित इस परियोजना को **11 नवंबर 2026 को आर्थिक मामलों की मंत्रिमंडलीय समिति** से मंजूरी मिली। इसकी कुल अनुमानित लागत **3,230 करोड़ रुपये** है। संस्कृति मंत्रालय द्वारा विकसित किया जा रहा यह संग्रहालय, ऐतिहासिक नॉर्थ और साउथ ब्लॉक के स्थापत्य स्वरूप को सुरक्षित रखते हुए भवनों के पुनर्उद्देश्यीकरण (एडैप्टिव रीयूज) के माध्यम से उन्हें सार्वजनिक सांस्कृतिक स्थलों के रूप में बदल देगा। नॉर्थ और साउथ ब्लॉक में ही पहले महत्वपूर्ण सरकारी कार्यालय अवस्थित हुआ करते थे। वैश्विक स्तर के एक संग्रहालय के रूप में परिकल्पित, यह सांस्कृतिक स्थल ऐतिहासिक संग्रहों, विषय-आधारित दीर्घाओं और प्रदर्शनी संबंधी आधुनिक तकनीकों का समावेश करके भारत की सांस्कृतिक विरासत को नागरिकों, शोधकर्ताओं और दुनिया भर से आने वाले आगंतुकों के लिए सुलभ बनाएगा।

ऐतिहासिक भवनों से लेकर एक विश्वस्तरीय संग्रहालय तक

- 'युगे युगीन भारत संग्रहालय' नई दिल्ली के ऐतिहासिक **नॉर्थ और साउथ ब्लॉक** को शासन के केन्द्रों से बदलकर सार्वजनिक सांस्कृतिक स्थलों में रूपांतरित कर देगा। **भवनों के पुनर्उद्देश्यीकरण (एडैप्टिव रीयूज)** के माध्यम से विकसित यह परियोजना, इन ऐतिहासिक भवनों की स्थापत्य संबंधी विरासत को संरक्षित करने के साथ-साथ आधुनिक प्रदर्शनी स्थल तथा आगंतुकों के लिए सुविधाएं भी तैयार करेगी। इस संग्रहालय को एक ऐसे प्रमुख सांस्कृतिक स्थल के रूप में परिकल्पित किया गया है, जिसमें विरासत के संरक्षण को समकालीन संग्रहालय अवसंरचना के साथ जोड़ा गया है।

भवनों के पुनर्उद्देश्यीकरण (एडैप्टिव रीयूज) के माध्यम से विरासत का संरक्षण

- **ऐतिहासिक महत्व:** नॉर्थ और साउथ ब्लॉक 13 फरवरी 2026 तक सरकारी प्रशासन के केन्द्र रहे। यानी साउथ ब्लॉक के उद्घाटन के लगभग 95 वर्ष बाद तक, ये प्रशासनिक केन्द्र सक्रिय रहे। आजादी के बाद से साउथ ब्लॉक में प्रधानमंत्री कार्यालय स्थित था और इन भवनों में 16 प्रधानमंत्रियों के कार्यकाल के दौरान मंत्रिमंडल की बैठकें आयोजित की गईं।
- **सार्वजनिक स्थलों के रूप में रूपांतरण:** सरकारी कार्यालयों के नए प्रधानमंत्री कार्यालय 'सेवा तीर्थ' और 'कर्तव्य भवनों' में स्थानांतरित हो जाने के बाद, इन दोनों भवनों को 'युगे युगीन भारत संग्रहालय' के हिस्से के रूप में नए उपयोग के लिए तैयार किया जा रहा है।
- **स्थापत्य कला का संरक्षण:** यह परियोजना कम से कम हस्तक्षेप के जरिए इन भवनों के ऐतिहासिक स्वरूप, उनके बाहरी हिस्सों और मूल वास्तुशिल्प को संरक्षित करेगी।
- **मौजूदा स्थानों को नया रूप:** आंगन, गलियारों एवं कमरों को गैलरी व प्रदर्शनी क्षेत्रों के रूप में ढाला जाएगा, जिससे एक समग्र संग्रहालय का अनुभव प्राप्त हो सकेगा।
- **टिकाऊ और समावेशी डिजाइन:** पुनर्विकास के क्रम में संसाधनों के टिकाऊ उपयोग और सभी के लिए सुलभता को प्राथमिकता दी जाएगी।

वैश्विक स्तर का एक संग्रहालय

- प्रस्तावित संग्रहालय प्रदर्शनी क्षेत्र के दृष्टि से दुनिया के सबसे बड़े सांस्कृतिक संस्थानों में से एक होगा और इसका बुनियादी ढांचा कुछ इस तरह तैयार किया जाएगा कि इसमें बड़ी संख्या में आगंतुक आ सकें।
- **प्रस्तावित निर्मित क्षेत्र:** नॉर्थ और साउथ ब्लॉक परिसर में लगभग **1,78,509 वर्ग मीटर**।
- **दुनिया का सबसे बड़ा डिस्प्ले एरिया:** इस संग्रहालय में **एक लाख वर्ग मीटर** से अधिक आकार का 'डिस्प्ले स्पेस' देने की योजना है। यह लूव्र (73,000 वर्ग मीटर), ब्रिटिश म्यूजियम (70,000 वर्ग मीटर) और हर्मिटेज (66,800 वर्ग मीटर) के डिस्प्ले एरिया से भी बड़ा होगा।
- **आगंतुक क्षमता:** इसे प्रतिदिन **30,000** और प्रतिवर्ष **एक करोड़ आगंतुकों** के लिए डिजाइन किया गया है।
- **आगंतुकों का प्रबंधन:** इस संग्रहालय में लोगों की आवाजाही को सुविधाजनक बनाने हेतु, समयबद्ध प्रवेश और भीड़ प्रबंधन प्रणालियों की योजना बनाई गई है।
- **सार्वजनिक सुविधाएं:** प्रस्तावित सुविधाओं में बच्चों के लिए जगह, फूड कोर्ट, **स्मृति चिह्न की** दुकानें और प्रस्तुतियों के लिए स्थान तथा सुगम्य सार्वजनिक स्थान शामिल हैं।
- इस प्रकार, इस संग्रहालय के विकास में ऐतिहासिक रूप से दो महत्वपूर्ण भवनों का संरक्षण शामिल होगा। साथ ही, भारत और विदेशों से आने वाले नागरिकों एवं आगंतुकों के लिए एक बड़े तथा सुलभ सांस्कृतिक संस्थान का निर्माण भी किया जाएगा।

भारत की सभ्यतागत यात्रा को जीवंत बनाना

- 'युगे युगीन भारत संग्रहालय' विशेष रूप से तैयार की गई विषय-आधारित दीर्घाओं, ऐतिहासिक संग्रहों और जीवंत अनुभवों के जरिए भारत की सभ्यतागत यात्रा को प्रस्तुत करेगा।

चरणबद्ध विकास एवं कार्यान्वयन

- इस संग्रहालय को विभिन्न चरणों में विकसित किया जाएगा। इससे गैलरियों और प्रदर्शनियों का धीरे-धीरे समावेश किया जा सकेगा।

कार्यान्वयन अवधि: वित्त वर्ष 2026-27 से वित्त वर्ष 2030-31 तक।

- **पहली गैलरी: 'अलंकार गैलरी' (अडॉर्नमेंट गैलरी)** के 2027 के उत्तरार्ध में नॉर्थ ब्लॉक में आम जनता के लिए खुलने की उम्मीद है।
- **गैलरियों का विस्तार:** बाद के चरणों में और अधिक विषय-आधारित गैलरियां जोड़ने हेतु एक मॉड्यूलर दृष्टिकोण तैयार किया जा रहा है।
- **परियोजना की निगरानी:** कार्यान्वयन की प्रक्रिया में समन्वित परियोजना प्रबंधन, डिजाइन एवं तकनीकी निगरानी, गुणवत्ता आश्वासन तथा समय-समय पर की जाने वाली निगरानी शामिल होगी।
- इस संग्रहालय से भारत की सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण और उसे जनता के सामने प्रस्तुत करने के कार्यों को मजबूती मिलने की उम्मीद है। साथ ही इससे शिक्षा, शोध, सांस्कृतिक जुड़ाव और पर्यटन के अवसर भी सृजित होंगे।

विषय-आधारित दीर्घाएं एवं प्रदर्शनियां

- इस संग्रहालय में स्थापत्य कला एवं शहरी परिदृश्य, गणित एवं खगोल विज्ञान, भाषाएं एवं लिपियां, आस्था एवं आध्यात्मिकता, तथा 'भारत कनेक्ट्स - व्यापार और विचार' जैसे विषयों पर आधारित गैलरियां होंगी।
- ये उन विषयों में से हैं जिन्हें इस संग्रहालय के लिए चुना गया है। मॉड्यूलर दृष्टिकोण के जरिए यहां कुछ और गैलरियां बनाने की भी योजना है।



भारत की सांस्कृतिक विविधता को दर्शाने वाला एक संग्रह

- इस संग्रहालय में संभावित रूप से प्रदर्शित किए जा सकने वाले लगभग **18 लाख** वस्तुओं की पहचान की गई है। इनमें देश भर के विभिन्न संस्थानों के संग्रह शामिल हैं।
- चिह्नित की गई वस्तुएं **राष्ट्रीय संग्रहालय**, संस्कृति मंत्रालय के अंतर्गत आने वाले अन्य संग्रहालयों, **भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (एएसआई) के 52** पुरातात्विक स्थल संग्रहालयों, विभिन्न राज्यों के संग्रहालयों और निजी संग्रहों से ली गई हैं।
- इन वस्तुओं का इस संग्रहालय की प्रदर्शनियों में समावेश करने के तरीकों को निर्धारित करने हेतु सामग्रियों और संग्रह का विश्लेषण किया जा रहा है।
- इस परियोजना में विरासत की वस्तुओं के संरक्षण एवं प्रबंधन में सहायता हेतु, संग्रह को रखने तथा उसे सुरक्षित रूप से सहेजने की विशेष सुविधाएं भी शामिल हैं।

तकनीक और संवादात्मक अनुभव

- इस संग्रहालय की प्रदर्शनियों को अधिक आकर्षक एवं सुलभ बनाने के हेतु आधुनिक तकनीकों का समावेश किया जाएगा।
- **मुग्ध करने वाले अनुभव:** संवादात्मक व्याख्या और कहानी सुनाने की प्रक्रिया को बेहतर बनाने हेतु **ऑगमेंटेड रियलिटी (एआर), वर्चुअल रियलिटी (वीआर) और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई)** का सुनियोजित उपयोग।
- **डिजिटल दस्तावेजीकरण:** 5 नवंबर 2026 को घोषित संस्कृति मंत्रालय और **'गूगल आर्ट्स एंड कल्चर'** के बीच होने वाले सहयोग में, इस संग्रहालय के ऐतिहासिक भवनों और संग्रहों के डिजिटलीकरण के प्रयास शामिल हैं।
- **संग्रहालय संबंधी आधुनिक बुनियादी ढांचा:** इस संग्रहालय के संचालन तथा आगंतुकों के अनुभवों को बेहतर बनाने हेतु बुद्धिमान भवन प्रणालियों (इंटेलिजेंट बिल्डिंग सिस्टम), प्रदर्शनी तकनीकों और संरक्षण संबंधी सुविधाओं का समावेश।

भावी पीढ़ियों के लिए एक सांस्कृतिक संस्थान

- भारत की सभ्यतागत विरासत को सहेजने एवं प्रदर्शित करने के साथ-साथ, 'युगे युगीन भारत संग्रहालय' सांस्कृतिक पर्यटन, शिक्षा एवं शोध में योगदान देगा। साथ ही, यह जनभागीदारी के अवसर भी सृजित करेगा। एक राष्ट्रीय सांस्कृतिक संस्थान के रूप में, यह **विद्यार्थियों, शोधकर्ताओं, विद्वानों, सांस्कृतिक क्षेत्र से जुड़े लोगों, आम जनता तथा देश-विदेश के पर्यटकों** सहित विविध प्रकार के आगंतुकों के लिए लाभकारी साबित होगा। यह उन्हें भारत की विविध सांस्कृतिक विरासत को जानने और सराहने का अवसर प्रदान करेगा।
- इस परियोजना के निर्माण एवं संचालन के विभिन्न चरणों के दौरान प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रोजगार सृजित होने की उम्मीद है। इससे कारीगरों, शिल्पकारों, शोधकर्ताओं, संग्रहालय विशेषज्ञों, डिजाइनरों, कलाकारों और अन्य रचनात्मक पेशेवरों के लिए अवसर सृजित होने की संभावना है। साथ ही, यह आतिथ्य और पर्यटन से जुड़े क्षेत्रों में भी आजीविका को सहारा देगा। 'मेक इन इंडिया' को बढ़ावा देने हेतु, यह परियोजना एक व्यवस्थित वेंडर विकास प्रक्रिया के जरिए विश्वस्तरीय संग्रहालय संबंधी सामग्रियों एवं उत्पादों के घरेलू निर्माण को प्रोत्साहित करेगी। इससे भारतीय कारीगरों, निर्माताओं, संरक्षण विशेषज्ञों और तकनीकी प्रदाताओं के लिए नए अवसर सृजित होंगे।
- उम्मीद है कि यह संग्रहालय टिकटों की बिक्री, खान-पान की सुविधाओं, कार्यक्रमों एवं स्थान के किराये, डिजिटल अनुभवों, निर्देशित पर्यटनों, खुदरा दुकानों और आगंतुकों से संबंधित अन्य सेवाओं के जरिए **निरंतर राजस्व अर्जित** करेगा। **प्रति वर्ष एक करोड़ आगंतुकों** को संभालने की क्षमता वाले बुनियादी ढांचे से लैस, इस परियोजना का उद्देश्य दीर्घकालिक सांस्कृतिक संरक्षण को आम लोगों की सुलभता और राजस्व अर्जित करने वाली आगंतुक संबंधी सेवाओं के साथ जोड़ना है। इसके शैक्षिक, सांस्कृतिक एवं पर्यटन संबंधी लाभों का उद्देश्य भारत तथा विदेशों से आने वाले आगंतुकों तक इनका विस्तार करना है।

प्रारंभिक परीक्षा (Prelims) के लिए अभ्यास प्रश्न

प्रश्न: 'युगे युगीन भारत संग्रहालय' के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. इसे नई दिल्ली के ऐतिहासिक नॉर्थ और साउथ ब्लॉक परिसर में एक प्रमुख राष्ट्रीय सांस्कृतिक संस्थान के रूप में विकसित किया जा रहा है।
2. इसे 'जनता के संग्रहालय' के रूप में परिकल्पित किया गया है।
3. इसका मुख्य उद्देश्य भारत की 5,000 वर्षों से अधिक पुरानी सभ्यतागत यात्रा की निरंतरता, विविधता और समृद्धि को इसकी मूर्त एवं अमूर्त सांस्कृतिक विरासत के माध्यम से प्रदर्शित करना है।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?

- (A) केवल 1 और 2
- (B) केवल 2 और 3
- (C) केवल 1 और 3
- (D) 1, 2 और 3

मुख्य परीक्षा (Mains) के लिए अभ्यास प्रश्न

- **"भारत की 5,000 वर्षों से अधिक पुरानी सभ्यतागत विरासत के संरक्षण और प्रदर्शन में 'युगे युगीन भारत संग्रहालय' की परिकल्पना के महत्व पर प्रकाश डालिए। इस प्रकार की पहल भारत की मूर्त और अमूर्त सांस्कृतिक विरासत को भावी पीढ़ियों से जोड़ने में किस प्रकार सहायक हैं?"**
- *(शब्द सीमा: 250 शब्द)*

महत्वपूर्ण तथ्य

Census portal briefly lists 287 'other' religions

A drop-down menu had many options for those not choosing 6 major religions; it was taken down later

The list was 'predictive text' to help enumerators fill forms without 'spelling mistakes', says official

The self-enumeration portal went live on Monday for States where elections are scheduled in 2027

Vijaita Singh
Abhinay Lakshman
NEW DELHI

Going by the government's initial classification of "other" religions in the self-enumeration portal for the Population Enumeration phase of Census 2027, 'ISKCON', 'Ramakrishna Paramahans', 'Sanatan', 'Shri Ram', 'Shri Krishna', 'Balmiki', 'Ramdev', 'Bishnoi', 'Sarna', 'Tantric', 'Yogi', 'Shia', 'Sunni', 'Methodist' and 'Pentecostal', are among the religions reflected in the country.

While these were among 287 options given under the 'Others' category for the question pertaining to the respondent's religion in the self-enumeration portal that went live on Monday for four poll bound States, the drop-down menu with these options was removed later in the day after *The Hindu* raised a query with the Union Home Ministry regarding the classification.

Along the same lines as the previous Census exercises, there are seven main categories in the religion column: Hindu, Muslim, Christian, Sikh, Buddhist, Jain, and Others. In a first, the 'Others' category had been expanded into at least 287 further options, many of which have previously been classified by the Indian government as sects within the six major religions or as respondents' entries in the "other religions and persuasions" category in the 2001 and 2011 Censuses.

The drop-down menu also had several options that had not been recorded before, such as 'ISKCON', 'Ramakrishna Paramhans', 'Ramdev', 'Khalsa', 'Tirupati Balaji', 'Baldev', 'Devi Maa', and 'Dev Samaj', among others.

After the removal of the drop-down menu, a representative of the Registrar General and Census Commissioner of India (RG&CCI) said that, apart from the six major religions, there is the 'Others' category in which the "respondent is free to write any other religion as in previous censuses." The official also said that it was "incorrect to say the mentioned terms have been shown as other religions".



Behind schedule: The current Census has been delayed by six years with the last one having been conducted in 2011. PTI PHOTO

However, a government official told *The Hindu* that the list of options had been prepared as "predictive text entries" for the 'Other' religions category to help enumerators fill in the forms without "spelling variations and mistakes" when a respondent mentions any faith other than the six major ones. Giving an example, the official explained that if a respondent said they were a follower of ISKCON, the predictive text list would complete the entry.

How these appeared as options in a drop-down box is being inquired into, the official said.

The self-enumeration portal (se.census.gov.in) went live on Monday for the States of Uttar Pradesh, Uttarakhand, Goa, and Punjab, where elections are scheduled to be held in 2027. For the rest of the country, the portal will open in January 2027.

A retired Census official told *The Hindu* that the options in the now-removed drop-down box were "strange", particularly because there is no previous data to compare them with.In 2001 and 2011, the tables on classified sects within major religions and respondents' entries in the 'other religions and persuasions' category were tabulated later, after the enumeration was completed.

Before the drop-down box under the other religions category was removed, a government official in Uttar Pradesh, who provided training to Census enumerators, said, "The instructions are to record religion from the six mentioned categories. If a respondent chooses the 'Other' category, they can pick from the specified drop-down box with more than 280 names, and if the preferred religion's name is not there, they can enter the name and it will be recorded as is."

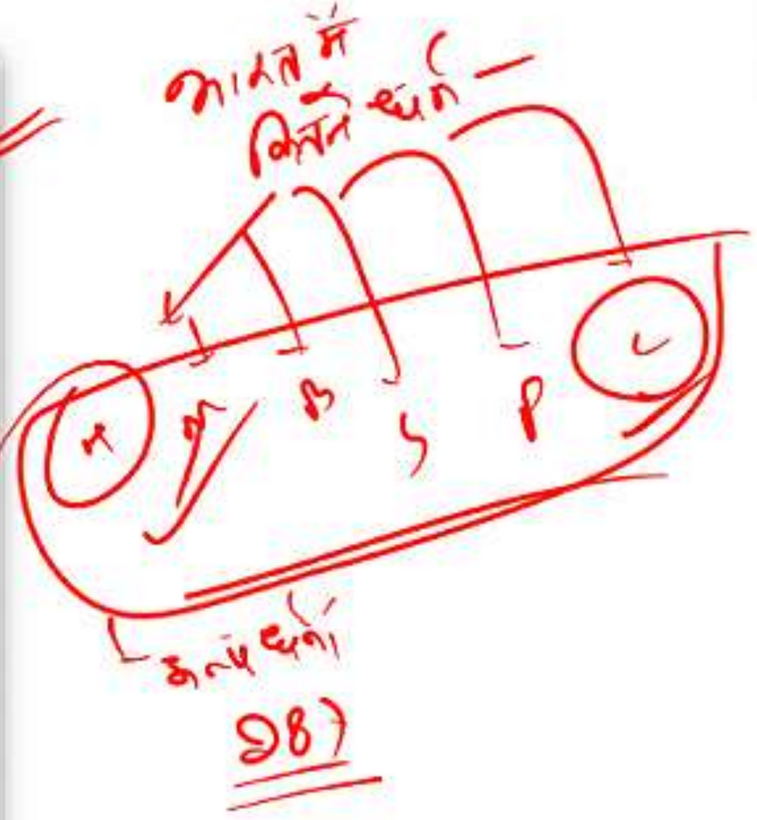
There has been a sustained movement by tribal communities calling for a separate religion column for Adivasi faiths, which they asserted was different from Hinduism.

Many firsts

The current Census, which has been delayed by six years with the last one having been conducted in 2011, is being referred to as the first digital Census. It is also the first to enumerate caste and the first to allow self-enumeration. The Office of the RG&CCI has decided to use an open column for caste enumeration despite demands and protests for a drop-down box of all castes. The government's justification for using an open column was that there was no single available list of all castes, apart from the Scheduled Castes and Scheduled Tribes lists.

The RG&CCI had on August 14 notified a set of 40 questions to be asked during the Population Enumeration phase of Census 2027, which included 13 new questions or data fields that were not part of the Census 2011 questionnaire.

The questions that have been added for the first time are spouse's name, nationality, father's and mother's particulars, digital literacy, permanent residential address, place of COVID-19 vaccination, number of bank accounts, passport number, driving licence availability, and mobile, Aadhaar and voter ID numbers, if available.



महत्वपूर्ण तथ्य

- **जनगणना (Census)** किसी देश या क्षेत्र की पूरी आबादी की आधिकारिक रूप से गिनती करने और उनके सामाजिक, आर्थिक व जनसांख्यिकीय (Demographic) आंकड़े इकट्ठा करने की प्रक्रिया है। यह केवल लोगों की गिनती नहीं है, बल्कि इसके ज़रिए शिक्षा, साक्षरता, रोजगार, आवास, भाषा, धर्म और जीवन स्तर से जुड़ी जानकारी भी जुटाई जाती है।

जनगणना से जुड़े मुख्य तथ्य

- **कितने साल में होती है:** भारत में जनगणना सामान्यतः हर **10 साल (Decennial)** में एक बार आयोजित की जाती है। हालांकि, 2021 की जनगणना कोविड-19 महामारी के कारण स्थगित हो गई थी, जिसके चलते अब यह 16 साल के अंतराल के बाद **2026-27** में संपन्न हो रही है। (भारत में पहली जनगणना 1872 में लॉर्ड मेयो के समय हुई थी, और पहली नियमित/समकालिक जनगणना 1881 में शुरू हुई थी।)
- **कौन कराता है:** इसे भारत सरकार के **गृह मंत्रालय (Ministry of Home Affairs)** के अधीन **'भारत के महारजिस्ट्रार एवं जनगणना आयुक्त का कार्यालय' (Office of the Registrar General & Census Commissioner, India - ORGI)** कराता है। यह पूरी प्रक्रिया **जनगणना अधिनियम, 1948 (Census Act, 1948)** और जनगणना नियम, 1990 के तहत संचालित होती है।
- **किस सूची में आता है:** भारतीय संविधान की **7वीं अनुसूची (Seventh Schedule)** की **संघ सूची (Union List)** की **प्रविष्टि 69 (Entry 69)** में जनगणना को रखा गया है। संविधान के **अनुच्छेद 246** के तहत जनगणना कराने और इस पर कानून बनाने का अधिकार केवल केंद्र सरकार (संसद) के पास है।

2027 की जनगणना (Census 2027) के सबसे महत्वपूर्ण बिंदु

- **क्रम और ऐतिहासिक महत्व:** यह भारत की कुल **16वीं जनगणना** और आज़ादी के बाद **8वीं जनगणना** है।
- **भारत की पहली डिजिटल जनगणना:** यह देश की पहली पूरी तरह से डिजिटल जनगणना है। इसमें कागज़ के फॉर्म के बजाय **मोबाइल ऐप (Android और iOS)** के माध्यम से डेटा एकत्र किया जा रहा है और रीयल-टाइम निगरानी के लिए **CMMS (Census Management & Monitoring System)** पोर्टल बनाया गया है।
- **स्व-गणना (Self-Enumeration) की सुविधा:** पहली बार आम नागरिकों को यह विकल्प दिया गया है कि वे प्रगणक (Enumerator) के घर आने से पहले 15 दिनों की निर्धारित अवधि में ऑनलाइन पोर्टल के माध्यम से खुद अपनी जानकारी दर्ज कर सकें।
- **जातिगत गणना (Caste Enumeration):** 1931 के बाद पहली बार मुख्य जनगणना के साथ-साथ देश भर में **सभी जातियों की गणना (Caste Enumeration)** भी इलेक्ट्रॉनिक रूप से शामिल की गई है (अभी तक केवल SC और ST की गिनती होती थी)।

महत्वपूर्ण तथ्य

दो चरणों में आयोजन और संदर्भ तिथियाँ (Reference Dates):

- **पहला चरण (मकान सूचीकरण और आवास जनगणना):** अप्रैल 2026 से सितंबर 2026 के बीच आयोजित।
- **दूसरा चरण (जनसंख्या गणना):** लद्दाख, जम्मू-कश्मीर, हिमाचल प्रदेश और उत्तराखंड के बर्फीले इलाकों के लिए संदर्भ तिथि **1 अक्टूबर 2026** निर्धारित की गई, जबकि शेष पूरे भारत के लिए संदर्भ तिथि **1 मार्च 2027** (मुख्य गणना फरवरी 2027 में) तय की गई है।
- **नए डेटा पैरामीटर और शुभंकर (Mascots):** इस बार आवास जनगणना में इंटरनेट की उपलब्धता, स्मार्टफोन, एलपीजी/पीएनजी (LPG/PNG) कनेक्शन, पेयजल स्रोत और मुख्य अनाज की खपत जैसे नए सवाल जोड़े गए हैं। साथ ही, जनगणना 2027 के लिए **'प्रगति' (महिला)** और **'विकास' (पुरुष)** को आधिकारिक शुभंकर (Mascots) बनाया गया है।
- **परिसीमन (Delimitation) का आधार:** 2027 की जनगणना के आंकड़े भविष्य में लोकसभा और विधानसभा सीटों के **परिसीमन (Delimitation)** और महिला आरक्षण कानून को लागू करने का मुख्य आधार बनेंगे।

महत्वपूर्ण तथ्य

Polity SIR

ECI has no proof that SIR was 'unanimous' decision: Rahul

Krishnadas Rajagopal
NEW DELHI

The Election Commission of India (ECI) failed to produce any proof to establish its claim that the special intensive revision (SIR) was a "unanimous" decision, Congress leader Rahul Gandhi told the Supreme Court on Monday.

"No minutes of the meeting, file notings, recorded approvals, agenda, deliberations or other primary material evidencing the participation and approval of all three members have been produced with the ECI counter-affidavit of October 26," he said.


Rahul Gandhi

Mr. Gandhi and other INDIA bloc leaders have separately filed an application containing a set of "interrogatories" directed at the Chief Election Commissioner Gyanesh Kumar and others involved in the SIR.

The pointed questions inquire about the number and details of each SIR file, as well as the specific occasions between February 19, 2025, and October 26, 2026, on which the Election Commissioners, Sukhbir Singh Sandhu and Vivek Joshi, expressed dissent or reservation regarding any matter related to the SIR, ECINET, Form 6, or the filing of appeals.

The ECI's October 26 affidavit, in response to a petition filed by INDIA bloc leaders, denied any differences of opinion between the CEC and the Election Commissioners over the SIR process. Mr. Gandhi questioned why the affidavit was filed by the ECI when Mr. Kumar, Mr. Sandhu and Mr. Joshi were separately made respondents.

Plea in SC says ghost Form 7s haunt Mustafabad constituency during SIR

Krishnadas Rajagopal
NEW DELHI

Congress leader Ali Mehdi approached the Supreme Court on Monday alleging that Assembly Constituency-69 (AC-69) of Mustafabad is seeing a "substantial" amount of ghost Form 7s seeking deletion of voters in the ongoing Delhi SIR, and a crisis of electoral integrity is brewing.

The writ petition filed through advocate Shariq Ahmed, and highlighting multiple reports by *The Hindu*, said voters whose names feature for deletion on the grounds of death, absence and permanent shifting were found to be very much alive, present and staying put at their recorded addresses on the electoral roll.

The persons in whose names Form 7s have been filed for deletion of these voters deny having filed or signed on the applications. The petition alleged that ghost Form 7s seemed to have been filed by phantom objectors in the Mustafabad constituency.

"The integrity of an electoral roll is compromised not only when an ineligible name remains upon it. It is equally compromised when an eligible elector is removed from it on a fact which never existed or upon an objection which the supposed objector never made. The present record discloses the latter danger in its stark form," the petition said.


Form 7 requires identification of applicant, the particular ground for deletion and a declaration as to the truth of the particulars stated.

It said persons declared dead were alive, while persons said to have shifted were found at home. Thirty-seven applications examined by the authorities were found to be false or fabricated.

"The existence of a genuine objector and the existence of a genuine ground for deletion – in Mustafabad, both are under serious doubt at the same time," Mr. Ahmed submitted.

Section 22 of the Representation of the People Act, 1950 requires the Electoral Registration Officer to be satisfied, after proper verification of the facts, before an entry can be corrected or deleted.

Rule 13(2) of the Registration of Electors Rules, 1960 requires an objection to the proposed inclusion of a name or an application for deletion to be made in Form 7 and to be preferred by a person whose own name is included in the electoral roll.

Form 7 requires identification of the applicant, identification of the elector objected to, the particular ground for deletion and a declaration as to the truth of the particulars stated.

महत्वपूर्ण तथ्य

- BNSS Section 163
- Article 19 (1)
- Article 19 (3)
- Article 20
- Article 21
- Article 22
- ECI
- CEC – EC's
- SIR
- RPA 1950 – 21(3)
- RPA 1950 – 28 (RER-1960 - 6,7,8)
- RPA 1951 - 29(A)
- Conduct of Election Rules 1961 – 4(A) – Form 26

→ Youtube Homework

महत्वपूर्ण तथ्य

Cyclone Akvan likely to cross A.P. coast on November 20

Weather system over Bay of Bengal likely to intensify into a severe cyclonic storm today; rainfall may begin in State from November 18, IMD says; CM reviews preparedness, orders precaution

Nellore Sravani
VIJAYAWADA

The deep depression over southeast and southwest Bay of Bengal intensified into a cyclonic storm on Monday. Cyclone Akvan is moving north-northwestwards towards the Andhra Pradesh coast at 10 kmph.

According to the India Meteorological Department (IMD), at 5.30 p.m., the storm was centred on the central parts of south and westcentral Bay of Bengal, which is about 610 km east of Chennai of Tamil Nadu, 630 km northeast of Trincomalee in Sri Lanka, 660 km southeast of Machilipatnam and 670 km south-southeast of Visakhapatnam and 790 km south of Gopalpur in Odisha.



A farmer ties paddy stalks together in Vijayawada Rural on Monday to minimise damage from the approaching cyclone. G.N Rao

The storm may continue to move north-northwestwards and intensify into a severe cyclonic storm over west-central Bay of Bengal by Tuesday evening and may cross the Andhra Pradesh coast around noon on November 20, as a very severe cyclonic storm, with windspeed gusting to 145 kmph. Rain may begin in the State from November 18, becoming very heavy on November 19 and 20. The IMD said that the probable landfall location could be anywhere between Nellore of SPSR Nellore district and Tuni of Kakinada district.

The districts of Konaseema, Kakinada, East Godavari, West Godavari, Krishna, NTR and Guntur have been put on alert, as very heavy to extremely heavy rainfall is expected in these districts on November 19 and 20. Except for Krishna and NTR, the other districts bore the brunt during Cyclone Arnab and Cyclone Murasu too. Most of these districts are known for rich cultivation of paddy. Chief Minister N. Chandrababu Naidu on Monday reviewed preparations for the deep depression and instructed officials to consider the recommendations made by the Central team.

YouTube Homework

- Cyclone Arnab & Murasu

Revision youtube

महत्वपूर्ण तथ्य

- **चक्रवात अक्वन (Cyclone Akvan)** उत्तरी हिंद महासागर (अरब सागर या बंगाल की खाड़ी) में विकसित होने वाला एक उष्णकटिबंधीय चक्रवात (Tropical Cyclone) है।
- इसके बारे में प्रमुख तथ्य निम्नलिखित हैं:
- **नामकरण (Naming):** 'अक्वन' (Akvan) नाम **ईरान (Iran)** द्वारा सुझाया गया है। उत्तरी हिंद महासागर क्षेत्र के 13 सदस्य देशों (भारत, बांग्लादेश, ईरान, मालदीव, म्यांमार, ओमान, पाकिस्तान, कतर, सऊदी अरब, श्रीलंका, थाईलैंड, यूएई और यमन) द्वारा तैयार की गई चक्रवातों की नामकरण सूची (WMO/ESCAP Panel) के क्रमानुसार यह नाम रखा गया है।
- **नाम का अर्थ:** फ़ारसी (Persian) साहित्य और पौराणिक कथाओं (विशेषकर फिरदौसी के *शाहनामा*) में 'अक्वन' एक प्रसिद्ध पौराणिक पात्र/दैत्य (Akvan Div) का नाम है।
- **चक्रवात की प्रकृति:** उत्तरी हिंद महासागर में बनने वाले उष्णकटिबंधीय चक्रवातों की तरह यह समुद्र की गर्म सतह (आमतौर पर 26.5°C से अधिक तापमान) और कम दबाव के क्षेत्र (Low-Pressure Area) के कारण उत्पन्न होता है। भारतीय मौसम विज्ञान विभाग (IMD) ऐसे चक्रवातों की तीव्रता, मार्ग और तटीय प्रभावों की निगरानी करता है।

महत्वपूर्ण तथ्य

SC warns of contempt over Aadhaar accessibility issues

SC seeks response from Centre over claims that blind and low-vision persons remain unable to independently complete Aadhaar face authentication despite directions by top court in 2025

Krishnadas Rajagopal
NEW DELHI

The Supreme Court warned of initiating contempt action if the Union government and authorities did not give a detailed response to an application filed by advocate Amar Jain pointing out that many visually challenged and low-vision persons are still unable to independently complete their Aadhaar face authentication.

A Bench headed by Justice J.B. Pardiwala issued notice on Mr. Jain's application pointing out that the inability to complete Aadhaar face authentication was affecting e-KYC, which only relies on face authentication.

"The new Aadhaar App with face authentication interface which persons with blindness are unable to complete as it requires eyes to be attentive and looking into the frame," the application said.

Mr. Jain said he had personally suffered the obstacles pointed out by him in his application before the court.

"There is no grievance mechanism for accessibility complaints against apps, websites and software...



Persons with vision disabilities are unable to complete Aadhaar face authentication as it requires the eyes to focus. FILE PHOTO

Accessibility audits, nodal officers, human review of rejected KYC applications and compliance monitoring are not visible across regulated entities," the application noted.

Latest rejection

He has annexed with his application what he said was the "latest rejection by a private sector bank of my e-KYC for a credit card in October 2026".

Mr. Jain, represented by advocate-on-record Ila Shevl, said the continued lack of easy access was in violation of a Supreme Court judgment of 2025 in *Pragya Prasun versus Union of India* that had given comprehensive directions to ease digital access for the disabled.

"Amidst this wave of digital progress, there remains a crucial and often overlooked aspect that demands urgent attention - ensuring that digital infrastructure and services are accessible to all, including persons with disabilities and other marginalised groups," the court had observed in the 2025 judgment.

Mr. Jain was one of the parties in the Pragya Prasun case. He urged the apex court to intervene, once again, to direct the Union government, the Reserve Bank of India, Ministry of Electronics and Information Technology, Telecom Regulatory Authority of India, Department of Telecommunications, Securities and Exchange Board of India, Pension Fund Regulatory and Development Authority, and Insurance Regulatory and Development Authority of India to fully implement the 2025 judgment.

Monitoring compliance

The application has sought a clarification from the Ministry on how it intended to handle accessibility complaints about unregulated digital platforms and provide a mechanism to monitor compliance by regulated entities.

The court has also sought a response from the authorities on a separate application filed by the advocate-petitioner challenging the Ministry of Petroleum and Natural Gas mandate, announced through a September press release, making biometric Aadhaar authentication compulsory for subsidised domestic LPG refills from October 1, 2026.

The court scheduled the next hearing in four weeks.

YouTube Homework

- Aadhar Card

आधार अधिनियम - २०१६

महत्वपूर्ण तथ्य

Marginal decrease in unemployment rate in October: survey

The Hindu Bureau
NEW DELHI

The overall unemployment rate declined by 0.3 percentage points year-on-year

The Unemployment Rate (UR) in the country showed a marginal decrease in October, compared to last month, for persons aged 15 years and above, according to the Periodic Labour Force Survey (PLFS) released by the Ministry of Statistics & Programme Implementation on Monday.

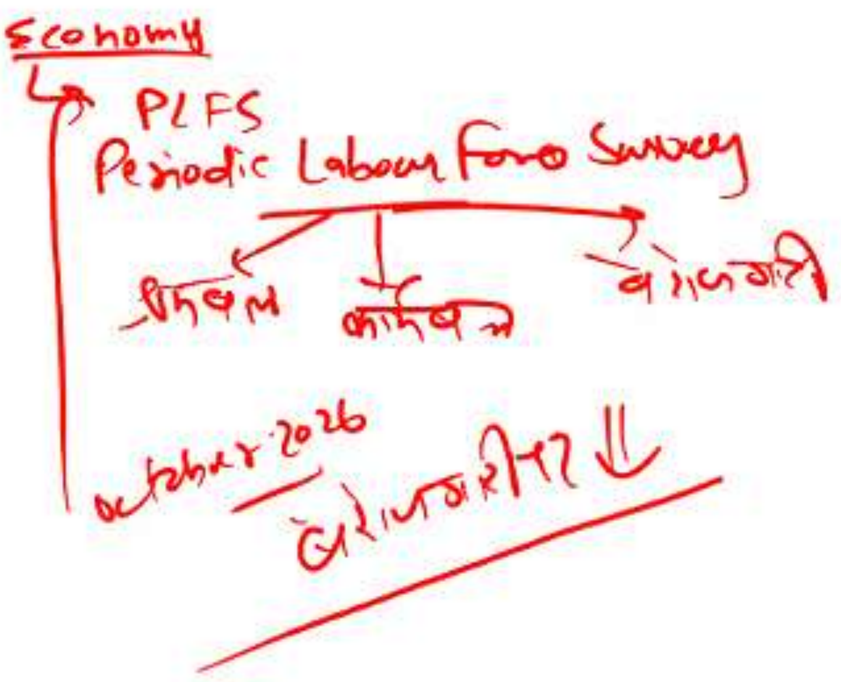
The UR was 4.9% in October, 0.1 percentage points less than 5% reported in September. Conducted by the National Statistics Office, the PLFS noted that compared to October 2025, the overall UR declined by 0.3 percentage points.

The rural UR declined from 4.4% to 4.2% and urban UR declined from 7% to 6.7%. UR among rural males was 4.3% during October, and for rural females, it was found to be 3.8%. "In urban areas, UR among females of age 15 years and above during October 2026 was 8.7% compared to 6.0% observed for male of the same age group," the PLFS noted.

On a year-on-year basis, the overall male UR declined from 5.1% in October 2025 to 4.9% in October 2026 and the Ministry said in a release that the improvement was more pronounced in rural areas, where male UR fell from 4.6% to 4.3%. Female UR decreased by 0.4 percentage points to 5% from 5.4% in the previous year.

Overall Labour Force Participation Rate (LFPR) improved to 55.7% in October 2026, compared to 55.5% in September 2026. In rural areas, LFPR increased from 58.0% to 58.4% , while the urban LFPR stood at 50.5% in October 2026 against 50.7% in September 2026.

Overall female LFPR was recorded as 35% in October 2026, up from 34.6% in September. "Rural female LFPR rose by 0.6 percentage points over the month and reached 39.5% in October 2026. However, female LFPR in urban areas remained stable at 25.9%. Over the year, the overall female LFPR increased by 0.8 percentage points, from 34.2% in October 2025 to 35% in October 2026," the Government added.



YouTube Homework

- PLFS

महत्वपूर्ण तथ्य

- सांख्यिकी और कार्यक्रम कार्यान्वयन मंत्रालय (MoSPI) के राष्ट्रीय सांख्यिकी कार्यालय (NSO) ने **16 नवंबर, 2026** को **अक्टूबर 2026 के लिए आवधिक श्रम बल सर्वेक्षण (PLFS) का मासिक बुलेटिन** जारी किया। यह जनवरी 2025 में लागू की गई संशोधित सर्वेक्षण पद्धति के तहत जारी किया गया 19वां मासिक बुलेटिन है, जिसमें **वर्तमान साप्ताहिक स्थिति (CWS)** के आधार पर 15 वर्ष और उससे अधिक आयु के व्यक्तियों के रोजगार और बेरोजगारी के आंकड़े प्रस्तुत किए गए हैं।

1. प्रमुख संकेतकों की तुलना (आयु: 15 वर्ष और उससे अधिक, CWS आधार पर)

संकेतक (Indicator)	अक्टूबर 2026	सितंबर 2026	अक्टूबर 2025	मुख्य बदलाव
समग्र बेरोजगारी दर (Overall UR)	**4.9%**	5.0%	5.2%	8 महीने के निचले स्तर पर
ग्रामीण बेरोजगारी दर (Rural UR)	**4.2%**	4.2%	4.4%	पिछले महीने के समान, सालाना गिरावट
शहरी बेरोजगारी दर (Urban UR)	**6.7%**	6.9%	7.0%	शहरी रोजगार में सुधार से गिरावट
श्रम बल भागीदारी दर (Overall LFPR)	**55.7%**	55.5%	55.4%	8 महीने के उच्चतम स्तर पर
श्रमिक जनसंख्या अनुपात (Overall WPR)	**53.0%**	52.7%	52.5%	फरवरी 2026 के बाद उच्चतम स्तर पर

महत्वपूर्ण तथ्य

2. रिपोर्ट की मुख्य विशेषताएँ

- **बेरोजगारी दर (UR) में गिरावट:** देश में समग्र बेरोजगारी दर सितंबर 2026 के 5.0% से घटकर अक्टूबर 2026 में **4.9%** पर आ गई है। इसका मुख्य कारण शहरी क्षेत्रों में बेरोजगारी घटना (6.9% से 6.7%) रहा। पुरुषों की समग्र बेरोजगारी दर **4.9%** पर स्थिर रही, जबकि महिलाओं की बेरोजगारी दर 5.2% से घटकर **5.0%** हो गई।
- **महिला भागीदारी में वृद्धि:** समग्र महिला श्रम बल भागीदारी दर (Female LFPR) सितंबर के 34.6% से बढ़कर **35.0%** पर पहुँच गई है, जो फरवरी 2026 के बाद इसका उच्चतम स्तर है। ग्रामीण महिलाओं में यह दर **39.5%** और शहरी महिलाओं में **25.9%** दर्ज की गई।
- **ग्रामीण महिला बेरोजगारी में रिकॉर्ड सुधार:** ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाओं की बेरोजगारी दर घटकर **3.8%** रह गई है, जो वर्ष 2026 का अब तक का सबसे निचला स्तर है। वहीं शहरी महिला बेरोजगारी दर भी 9.2% से घटकर **8.7%** पर आ गई।
- **श्रमिक जनसंख्या अनुपात (WPR):** कुल कार्यबल अनुपात बढ़कर **53.0%** हो गया है। ग्रामीण क्षेत्र में WPR बढ़कर **56.0%** (पिछले महीने 55.5%) हो गया, जबकि शहरी क्षेत्र में यह **47.1%** पर स्थिर रहा। पुरुषों का WPR **73.7%** और महिलाओं का WPR बढ़कर **33.3%** दर्ज किया गया।
- **सर्वेक्षण का दायरा:** अक्टूबर 2026 के ये अनुमान देश भर में **3,70,475 व्यक्तियों** के सर्वेक्षण पर आधारित हैं, जिनमें 2,11,474 ग्रामीण और 1,59,001 शहरी प्रतिभागी शामिल हैं।

महत्वपूर्ण तथ्य

'India shows us a picture of colour and complexity'

Prince William says every climate solution is a breakthrough making next goal easier 'until what once seemed impossible becomes inevitable'; two Indian firms among 15 Earthshot Prize finalists

Vinaya Deshpande Pandit
MUMBAI

India reached its target of 50% installed capacity from non-fossil fuels five years early, with solar capacity growing more than 50-fold in just over a decade, Prince William said on Monday.

Addressing a gathering of award finalists, philanthropists, government leaders and investors at the Earthshot Prize Impact Assembly in Mumbai, he said the transformation was about more than energy.

"Too often, the world's emerging economies are presented with false choices: growth or the environment, prosperity or protection. But India shows us a different picture – a picture full of colour, complexity and possibility," he said.

He added that each climate solution was a breakthrough making the next goal easier "until what once seemed impossible becomes inevitable".



Climate agenda: Prince William speaks during the Earthshot Prize Impact Assembly, 2025 in Mumbai on Monday. DHANMAL YOGINI

Earthshot's impact

During his address at the plenary session, Prince William reflected on the Earthshot Prize's growth and impact, and the role of innovation, investment and collaboration in accelerating environmental solutions. He hailed India as a leading source of Earthshot innovation, praising Mahila Housing Trust and Mahindra Last Mile Mobility Limited – finalists for the 2026 Earthshot Prize.

Prince William and Catherine arrived in Mumbai on Monday for a three-day official visit for the sixth edition of the Earthshot Prize. It is the couple's first joint overseas visit in four years and their second trip to India in a decade.

The Earthshot Prize was founded by Prince William in 2020. It recognises 15 global finalists annually and selects five winners across five categories: Clean our Air, Fix our Climate, Revive our Oceans, Build a Waste-Free World, and Protect and Restore Nature.

Rangbirangi duniya

This year, two Indian initiatives are among the 15 finalists. The winners will be announced at a ceremony in Mumbai on Tuesday.

Using the Hindi phrase *'rangbirangi duniya'* (colourful world), Prince William told the audience: "Perhaps that is how we should see the future. Not in black and white, not presented as false choices between people and planets."

India has more Earthshot prize winners and finalists than any other country, he said.

"But this is not India's responsibility alone. Our finalists span continents and industries from cleaner transport to agricultural insurance, from renewable energy to tackling dangerous chemicals. They show us that no country, company, or community has all the answers. We must learn from one another," he added.

Batting for change

Earlier on Monday, the royal couple played gully cricket with local children and former cricketer Sachin Tendulkar in South Mumbai's Ballard Estate, before travelling on the Mumbai Metro to the Bandra Kurla Complex.

Former New Zealand Prime Minister Dame Jacinda Ardern, a trustee of the Earthshot Prize, also addressed the gathering.

"With nearly half of humanity now living in cities, that is where tipping points are triggered. One city proves something works, the next one copies it, and soon, it's simply how things are done," she said.

Earth shot Prize
चर्चा में
पुरस्कार

YouTube Homework

- Nobel Prize

महत्वपूर्ण तथ्य

- **अर्थशॉट पुरस्कार (The Earthshot Prize)** जलवायु परिवर्तन और पर्यावरण संकटों के व्यावहारिक व नवीन समाधान (Innovative Solutions) खोजने और उन्हें वैश्विक स्तर पर बढ़ावा देने के लिए दिया जाने वाला सबसे प्रतिष्ठित पर्यावरण पुरस्कार है। इसे **प्रिंस विलियम** और **सर डेविड एटनबरो** द्वारा **2020** में शुरू किया गया था।
- 2026 के संस्करण से जुड़ी प्रमुख जानकारी नीचे दी गई है:

1. भारत में आयोजन (स्थान और तिथियाँ)

- **स्थान:** अर्थशॉट पुरस्कार 2026 (छठा संस्करण) भारत की आर्थिक राजधानी **मुंबई (महाराष्ट्र)** में आयोजित किया गया। यह पहली बार है जब इस पुरस्कार समारोह की मेज़बानी भारत ने की।
- **कब से कब तक:** अर्थशॉट वीक और संबंधित कार्यक्रम **नवंबर 2026 के पहले सप्ताह** (मुख्य रूप से **4 से 7 नवंबर 2026** के आसपास) मुंबई में आयोजित हुए, जिसमें मुख्य पुरस्कार समारोह **6 नवंबर 2026** को संपन्न हुआ।

2. पुरस्कार राशि और श्रेणियाँ

- हर साल पर्यावरण से जुड़ी **पाँच मुख्य श्रेणियों** में एक-एक विजेता चुना जाता है, और प्रत्येक विजेता को अपने प्रोजेक्ट को बड़े पैमाने पर लागू करने के लिए **1 मिलियन पाउंड (£1 Million — लगभग ₹11 करोड़)** की पुरस्कार राशि दी जाती है।

3. अर्थशॉट पुरस्कार 2026 के विजेता (5 श्रेणियाँ)

- 2026 में दुनिया भर से चुने गए 15 फाइनलिस्ट में से निम्नलिखित 5 संगठनों को विजेता घोषित किया गया:

1. **प्रकृति की रक्षा और पुनर्स्थापना (Protect and Restore Nature):**
   - **विजेता: नेचरमेट्रिक्स (NatureMetrics — यूनाइटेड किंगडम)** — पर्यावरणीय डीएनए (eDNA) तकनीक के माध्यम से जैव विविधता की निगरानी करने और पारिस्थितिकी तंत्र की रक्षा करने के लिए।
2. **हवा को स्वच्छ बनाना (Clean Our Air):**
   - **विजेता: महिंद्रा लास्ट माइल मोबिलिटी (Mahindra Last Mile Mobility — भारत)** — भारत में किफायती इलेक्ट्रिक तिपहिया और वाणिज्यिक वाहनों को बड़े पैमाने पर अपनाने के माध्यम से शहरी वायु प्रदूषण और कार्बन उत्सर्जन को कम करने के लिए।
3. **महासागरों को पुनर्जीवित करना (Revive Our Oceans):**
   - **विजेता: कोस्टल विलेजेस / हाई सीज़ अलायंस पहल (Coastal & Marine Conservation)** — तटीय समुदायों के नेतृत्व में समुद्री पारिस्थितिकी तंत्र और प्रवाल भित्तियों (Coral Reefs) के संरक्षण के लिए।
4. **कचरा-मुक्त दुनिया का निर्माण (Build a Waste-Free World):**
   - **विजेता: सर्कुलर पैकेजिंग / वेस्ट-टू-वैल्यू पहल** — औद्योगिक और प्लास्टिक कचरे को कम करने और सर्कुलर इकोनॉमी मॉडल विकसित करने के लिए।
5. **जलवायु को ठीक करना (Fix Our Climate):**
   - **विजेता: क्लीन एनर्जी / ग्रीन इंडस्ट्रियल हीट सॉल्यूशन** — भारी उद्योगों में जीवाश्म ईंधन के विकल्प के रूप में स्वच्छ और नवीकरणीय ऊर्जा तकनीक प्रदान करने के लिए।

महत्वपूर्ण तथ्य

Divergent positions mark draft text of COP31 in Turkiye

Jacob Koshy
NEW DELHI

Halfway into COP31 deliberations under way at Antalya in Turkiye, developing countries have asked developed countries to "lead" efforts to achieve net zero by 2030 and achieve net negative emissions by 2045.

Net zero refers to carbon emissions being matched by carbon prevented from being emitted (through trees and other yet-unproven technological methods).

Several developed countries have set individual dates for achieving net zero by 2050 with major (fossil fuel-dependent) developing countries – India and China, for instance – committing to 2070 and 2060 deadlines, respectively.

Developing country positions are typically carried by a coalition called LMDC (Like Minded Developing Countries, which includes India), the Arab Group, the African Group, and the LDCs (Least Developed Countries).

Developed country positions come mainly from the EU, the U.K., and Japan. The U.S. has withdrawn from the Paris Agreement.

There is language in the draft cover text that calls upon developing countries to "contribute voluntarily" towards climate finance – the trillions of dollars required for the globe to collectively adapt to a fossil fuel-free era as well as make good the losses that have already resulted from climate change.

The basic structure of the UN framework on climate change has a clear line separating developed countries – acknowledged to be responsible for most of the historically accumulated carbon – and developing countries, who in the course of developing their economies are to be incentivised to avoid such emissions but with assistance – finance and technology – by the developed ones.

Developing countries also called upon developed countries to eliminate measures such as the European Union's Carbon Border Adjustment Mechanism (CBAM) – a tariff to protect European manufacturers, in the steel sector primarily – who use lower emissions to make a unit of the metal than several developing countries, whose steel is cheaper but dirtier, by the end of 2027. There are also positions that countries "be under no obligation" to achieve a goal for 35% of energy use sourced from electricity by 2035, a proposal moved by the COP31 Presidency.

पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय

Azadi Ka Amrit Mahotsav

भारत ने अंताल्या (तुर्किये) में आयोजित कॉप-31 में देश-आधारित जस्ट ट्रांजिशन मैकेनिज्म (न्यायसंगत परिवर्तन तंत्र) की मांग की; विकासशील देशों के लिए पर्याप्त वित्तपोषण, प्रौद्योगिकी हस्तांतरण और क्षमता विकास पर जोर दिया

श्री भूपेंद्र यादव ने राष्ट्रीय संप्रभुता और विभिन्न देशों की परिस्थितियों का सम्मान करने वाले दो-स्तरीय, पक्षकार-निर्देशित तंत्र की आवश्यकता पर जोर दिया

भारत ने जोर दिया कि न्यायसंगत परिवर्तन के दायरे में रोजगार, सामाजिक सुरक्षा, जलवायु अनुकूलन, गरीबी उन्मूलन और ऊर्जा तक पहुंच जैसे विषयों को शामिल किया जाना चाहिए

प्रविष्टि तिथि: 16 NOV 2026 8:23PM by PIB Delhi

केंद्रीय पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्री श्री भूपेंद्र यादव ने आज वैश्विक न्यायसंगत परिवर्तन के एजेंडे को संवाद और अनुभवों के आदान-प्रदान से आगे बढ़ाते हुए इसके व्यावहारिक और देश-आधारित कार्यान्वयन पर जोर दिया। उन्होंने अंताल्या (तुर्किये) में आयोजित यूएनएफसीसीसी कॉप-31 के दौरान यूएई जस्ट ट्रांज़िशन वर्क प्रोग्राम के अंतर्गत जस्ट ट्रांज़िशन पर आयोजित चौथी वार्षिक उच्चस्तरीय मंत्रिस्तरीय गोलमेज बैठक को संबोधित करते हुए समावेशी और न्यायसंगत वैश्विक परिवर्तन के प्रति भारत की प्रतिबद्धता दोहराई, जिसमें यह सुनिश्चित हो कि विकास और परिवर्तन की प्रक्रिया में कोई भी वर्ग पीछे न छूटे।

महत्वपूर्ण तथ्य

- **COP31** (संयुक्त राष्ट्र जलवायु परिवर्तन सम्मेलन का 31वां सत्र या 31st UN Climate Change Conference) वैश्विक जलवायु वार्ताओं से जुड़ा एक अत्यंत महत्वपूर्ण सम्मेलन है।
- इस सम्मेलन से जुड़े प्रमुख बिंदु निम्नलिखित हैं:

1. आयोजन स्थल और तिथियाँ (Venue & Dates)

- **तारीख:** यह सम्मेलन **9 से 20 नवंबर 2026** तक आयोजित किया गया है।
- **स्थान:** यह सम्मेलन तुर्किये (Türkiye) के **अंतल्या (Antalya)** शहर स्थित **एंतालिया एक्सपो सेंटर (Antalya Expo Center)** में आयोजित हुआ है।

2. अनूठा सह-आयोजन मॉडल (Hosting Model & Compromise)

- मूल रूप से इस सम्मेलन की मेजबानी के लिए **तुर्किये** और **ऑस्ट्रेलिया** दोनों देशों ने दावेदारी (Bid) पेश की थी।
- लंबे कूटनीतिक विचार-विमर्श के बाद दोनों देशों के बीच एक समझौता हुआ, जिसके तहत **तुर्किये** आधिकारिक तौर पर इस सम्मेलन का मेजबान (Host & COP Presidency) बना, जबकि **ऑस्ट्रेलिया** ने वार्ताओं की अध्यक्षता (President of Negotiations) संभाली। इसके अलावा, छोटे द्वीपीय देशों (Pacific Island Nations) की चिंताओं को प्रमुखता देने के लिए इससे जुड़े प्री-कॉप (Pre-COP) कार्यक्रम फिजी और तुवालु में आयोजित किए गए थे।

3. COP31 के मुख्य एजेंडे और मुद्दे

- **क्लाइमेट फाइनेंस (Climate Finance):** विकासशील और गरीब देशों को जलवायु परिवर्तन से निपटने और हरित ऊर्जा अपनाने के लिए पर्याप्त एवं सुलभ वित्तीय सहायता जुटाना।
- **जीवाश्म ईंधन से दूरी (Transition away from Fossil Fuels):** ग्लोबल वार्मिंग को 1.5°C की सीमा के भीतर रखने के लिए पिछले सम्मेलनों में लिए गए संकल्पों को जमीन पर उतारना और ऊर्जा प्रणालियों में जीवाश्म ईंधन के इस्तेमाल को तेजी से कम करना।
- **शून्य अपशिष्ट और सर्कुलर इकोनॉमी (Zero Waste & Circular Economy):** मेजबान तुर्किये के विशेष जोर पर इस सम्मेलन में कचरा प्रबंधन, रीसाइक्लिंग और सर्कुलर इकोनॉमी को वैश्विक जलवायु एक्शन एजेंडा का अहम हिस्सा बनाया गया।
- **जलवायु अनुकूलन (Climate Adaptation):** विशेष रूप से समुद्र के बढ़ते जलस्तर से जूझ रहे तटीय और छोटे द्वीपीय देशों की सुरक्षा के लिए ठोस कदम उठाना।

महत्वपूर्ण तथ्य

Clear the path

India should use multilateral fora to advance bilateral cooperation

While maintaining its hard stance on cross-border terrorism, India has an opportunity to recognise that many of its other interests still merit sustained cooperation with Pakistan as the latter's climate minister Musadik Masood Malik prepares to attend the Shanghai Cooperation Organisation (SCO) Civilisational Dialogue Forum in New Delhi. India's official position since the Pahalgam attack and the ensuing confrontations along the border is that terrorism and bilateral talks cannot coexist. A month later, Prime Minister Narendra Modi signalled that India's relations with Pakistan would remain subordinate to its demands on cross-border terrorism by extending the condition to trade and water. South Asia is already one of the least economically integrated regions worldwide, with intra-regional trade at around 5%, and, as Chatham House has inferred, strained ties between India and its neighbours have created diplomatic vacuums that Beijing has taken advantage of through trilateral and regional groupings. Now, by inviting all SCO members to the national capital and participating in meetings ahead of the August 2027 Islamabad Summit, New Delhi has shown some maturity as a convening power. Islamabad is also being pragmatic in keeping channels open during its SCO chairmanship by participating in an initiative championed by Mr. Modi.

The pursuit of regionwide water security remains particularly fluid, with India seemingly overlooking the fact that it is upstream of Pakistan and Bangladesh and downstream of China. After India stopped sharing routine hydrological data of the Indus river and approved the Chenab-Beas link tunnel project, Mr. Malik fanned the flames saying Pakistan would "cut off those hands" seeking to restrict its share of the water. Yet China has now restricted the same data vis-à-vis the Brahmaputra while it builds the Medog mega-dam in Tibet. India has also protested the proposed Padma Barrage in Bangladesh, which has been increasing its alignment with China, echoing India building the Farakka Barrage over East Pakistan's objections in 1961. Climate change is rendering cooperation more essential to manage the integrity of contested geographies, the willingness of border populations to engage, and the potential to generate hydroelectric power. Suspending ties may communicate political resolve but will not diminish terrorists' capabilities in the region or improve India's security. It has already compromised India's ambitions to regional leadership, which require the ability to keep engaging even with difficult neighbours. India should go beyond using multilateral fora to assert its national position and start identifying areas where bilateral cooperation serves its interests, including with Pakistan.

SCO

Council of Head of States
II
रक्षा मंत्री
II
राजनाथ सिंह
विदेश

Council of Head of Nation
I
PM - मोदी
हुआ

SCO (States)

YouTube Homework

➤ SCO

2026
SCO Civilizational Dialogue Forum

New Delhi
10+8
Nov 2026

महत्वपूर्ण तथ्य

- **SCO सभ्यताओं का संवाद (SCO Civilizational Dialogue / Forum on Civilizational Dialogue)** शंघाई सहयोग संगठन (SCO) के सदस्य देशों, पर्यवेक्षक देशों और संवाद भागीदारों (Dialogue Partners) के बीच सांस्कृतिक और बौद्धिक संबंधों को गहरा करने वाला एक प्रमुख आयोजन है।
- 2026 के इस प्रमुख संवाद से जुड़े विवरण नीचे दिए गए हैं:

1. स्थान और तिथियाँ (Venue & Dates)

- **कहाँ हो रहा है:** यह आयोजन नई दिल्ली (भारत) में हो रहा है (इससे जुड़े मुख्य सत्र भारत मंडपम / सुषमा स्वराज भवन जैसे प्रमुख अंतरराष्ट्रीय केंद्रों में आयोजित किए जाते हैं)। भारत की मेज़बानी में इस मंच के माध्यम से यूरेशियाई सभ्यताओं के साझा इतिहास और सांस्कृतिक जुड़ाव पर विशेष ध्यान केंद्रित किया जा रहा है।
- **कब से कब तक:** यह संवाद **16 से 18 नवंबर 2026** के दौरान आयोजित किया जा रहा है।

2. प्रमुख बिंदु (Major Points & Highlights)

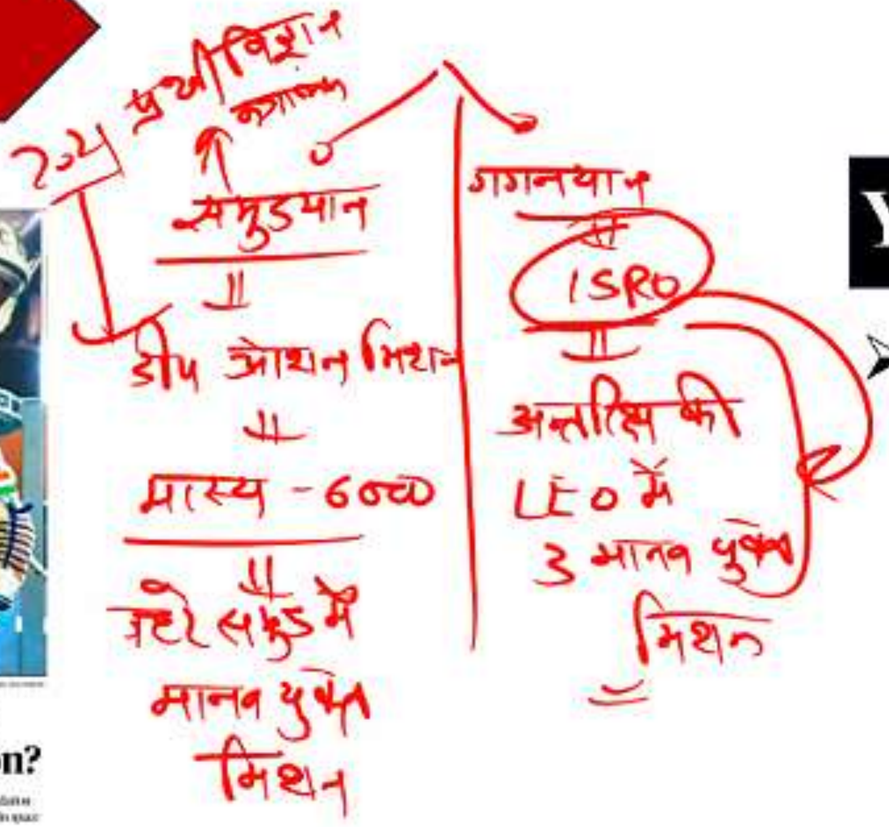
- **साझा ऐतिहासिक और सांस्कृतिक विरासत (Shared Civilizational Heritage):**
  - संवाद का मुख्य केंद्र भारत, मध्य एशिया, रूस, चीन और ईरान जैसी प्राचीन सभ्यताओं के बीच सदियों पुराने सांस्कृतिक, साहित्यिक और व्यापारिक (सिल्क रूट) संबंधों को पुनर्जीवित करना है।
  - बौद्ध विरासत, सूफी परंपराओं, भाषाओं और कला रूपों के आपसी प्रभाव पर विशेष अकादमिक सत्र आयोजित किए गए हैं।
- **वसुधैव कुटुम्बकम और शंघाई भावना (Vasudhaiva Kutumbakam & Shanghai Spirit):**
- वैश्विक भू-राजनीतिक तनावों और ध्रुवीकरण के बीच, यह संवाद **'एक पृथ्वी, एक परिवार, एक भविष्य'** (वसुधैव कुटुम्बकम) और SCO की **'शंघाई भावना'** के तहत शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व, बहुलवाद (Pluralism) और सांस्कृतिक विविधता के सम्मान का संदेश देता है।
- **जन-जन के बीच संपर्क और युवा भागीदारी (People-to-People & Youth Connect):**
- सदस्य देशों के विश्वविद्यालयों, थिंक टैंक, इतिहासकारों और युवा विद्वानों के बीच संयुक्त अनुसंधान (Joint Research) और छात्र आदान-प्रदान कार्यक्रमों को बढ़ावा देने पर सहमति बनाई जा रही है।
- **विरासत संरक्षण और डिजिटल आर्काइविंग (Heritage Conservation & Digitization):**
- प्राचीन पांडुलिपियों (Manuscripts), पुरातात्विक स्थलों और संग्रहालयों के डिजिटल संरक्षण के लिए सदस्य देशों के बीच तकनीकी सहयोग और ज्ञान साझा करने का प्रस्ताव रखा गया है।
- **सांस्कृतिक पर्यटन और पारंपरिक ज्ञान (Cultural Tourism & Traditional Knowledge):**
- SCO देशों के बीच सांस्कृतिक पर्यटन सर्किट विकसित करने, पारंपरिक चिकित्सा पद्धतियों (जैसे आयुर्वेद और योग) को बढ़ावा देने और रचनात्मक अर्थव्यवस्था (Creative Economy) में सहयोग बढ़ाने पर जोर दिया गया है।

महत्वपूर्ण तथ्य



How did ISRO pick astronaut candidates and train them for the Gaganyaan mission?

As India embarks on its first manned space mission, developing indigenous capabilities in crew selection and training not only lays the foundation for sustained space activities but also gives an impetus to biosciences — the study of behavioural and medical aspects of human living in space



YouTube Homework

- ISRO

महत्वपूर्ण तथ्य

ISRO ने गगनयान मिशन के लिए अंतरिक्ष यात्रियों (Astronauts) का चयन और प्रशिक्षण कैसे किया?

- **अंतरिक्ष यात्री कौन होते हैं:** समुद्र तल से 100 किमी ऊपर स्थित 'कार्मन रेखा' (Karman line) को पार करने वाले व्यक्ति को अंतरिक्ष यात्री माना जाता है। ऐतिहासिक रूप से, कठिन परिस्थितियों और आपात स्थिति में त्वरित निर्णय लेने की क्षमता के कारण सैन्य 'टेस्ट पायलटों' को सबसे पहले अंतरिक्ष में भेजा जाता है।
- **ISRO की चयन प्रक्रिया:** गगनयान के लिए ISRO और भारतीय वायु सेना (IAF) ने मिलकर एक बहु-स्तरीय चयन प्रक्रिया अपनाई। बेंगलुरु स्थित इंस्टीट्यूट ऑफ एयरोस्पेस मेडिसिन (IAM) ने टेस्ट पायलटों के कठोर शारीरिक, मानसिक और चिकित्सकीय परीक्षण किए। अंततः चार उम्मीदवारों—ग्रुप कैप्टन प्रशांत बालकृष्णन नायर, अजीत कृष्णन, अंगद प्रताप और विंग कमांडर शुभांशु शुक्ला—का चयन हुआ।
- **प्रशिक्षण (Training):** इन अंतरिक्ष यात्रियों ने रूस के 'यूरी गागरिन कॉस्मोनॉट ट्रेनिंग सेंटर' में प्रारंभिक प्रशिक्षण लिया। इसके तहत सेंट्रीफ्यूज ट्रेनिंग, भारहीनता (Zero-gravity) का अभ्यास, और विपरीत मौसम व समुद्र में जीवित रहने (Survival drills) की ट्रेनिंग दी गई। वर्तमान में बेंगलुरु के एस्ट्रोनॉट ट्रेनिंग सेंटर में सिमुलेटर (Simulators) के माध्यम से गगनयान से जुड़ा विशेष प्रशिक्षण जारी है। (शुभांशु शुक्ला और प्रशांत नायर ने एक्सिओम-4 मिशन के लिए अमेरिका के नासा (NASA) में भी प्रशिक्षण लिया है।)
- **क्वारंटीन (Quarantine) क्यों जरूरी है:** अंतरिक्ष यान के छोटे और बंद केबिन में संक्रमण तेजी से फैल सकता है। इसलिए, उड़ान से लगभग दो सप्ताह पहले अंतरिक्ष यात्रियों को सख्त मेडिकल प्रोटोकॉल के तहत क्वारंटीन में रखा जाता है ताकि वे किसी भी संक्रामक बीमारी से बचे रहें और मिशन सुरक्षित रहे।
- **महत्व:** भारत के इस पहले मानव अंतरिक्ष मिशन से देश में स्वदेशी प्रशिक्षण क्षमता विकसित होने के साथ-साथ 'बायोएस्ट्रोनॉटिक्स' (अंतरिक्ष में मानव शरीर और व्यवहार का अध्ययन) के क्षेत्र को भी बढ़ावा मिल रहा है।

महत्वपूर्ण तथ्य

Why RBI wants to cap select overseas remittance at ₹50 lakh to save rupees

The banking regulator has reportedly proposed a ₹50 lakh sub-limit within the $2,50,000 annual Liberalised Remittance Scheme cap to curb dollar outflows and protect the Indian currency; according to data from the Reserve Bank of India, lifestyle spending outweighs overseas investments.

EXPLAINER

Gowri Lakshmi

The story so far: The Reserve Bank of India (RBI) reportedly proposed to the Ministry of Finance tightening limits of the Liberalised Remittance Scheme (LRS), in a bid likely aimed at preventing a massive outflow of dollars from India. Under the current structure, Indian residents can remit up to $2,50,000 (over ₹2 crore) in a financial year for purposes such as travel, education, medical treatment and overseas investments.

What is LRS?

The LRS is a scheme under the Foreign Exchange Management Act (FEMA), introduced by the RBI in 2004. It covers both capital and current account transactions. Under the capital account, transactions are permitted for opening overseas foreign currency bank accounts, purchasing property, extending interest free loans of up to one year and investing in foreign equity, mutual funds and listed debt securities.

Under current account, remittances are permitted for private visits to foreign countries, education, or medical treatment. It also covers donations to non-resident or organisations outside India.



Forex control: The Liberalised Remittance Scheme is a scheme under the Foreign Exchange Management Act, introduced by the RBI in 2004 covering capital and current accounts. File picture

Why tighten limits?

So far in 2026, the rupee has depreciated by over 4% against the dollar amid global market volatility, geopolitical tensions and a surge in crude oil prices. In times of uncertainty, foreign investors withdraw funds from emerging market economies like India to park money in safe-haven assets which hastens depreciation of the currency.

This, combined with ballooning import bills, drags the rupee down further. In such a scenario, dollar demands by resident Indians also create pressure on the domestic currency, which depreciates faster than expected amid rising retail demand for dollars.

> The LRS is specifically for resident individuals. tighter LRS limits will not directly impact businesses and their trade payments or receivables.

What is RBI's proposal?

The central bank is seeking a sub-limit of ₹50 lakh for certain remittances, including business travel and pilgrimages, within the overall limit of $2,50,000/ year. Reports suggest the scope of the sub-limit may be limited to these categories and remittances for education and medical purposes likely exempted.

LRS outflow

According to RBI data, lifestyle spending outweighs overseas investments. In the eight months through August 2026, outward remittances under the LRS surpassed $20 billion, rising to $20.09 billion from $19.08 billion in the same period last year. Remittances under overseas travel accounted for $10.96 billion from January to August, while education related expenses rose two-fold to $855.52 million in August from March.

"While the outflow of LRS versus FPI flows or India's trade deficit might seem low, LRS is one of the few channels that the RBI can restrict quickly and independently without directly impacting investor sentiment," Gobinath Pathmanathan, chief executive officer of Yosaney, said.

Impact on businesses

The LRS is specifically for resident individuals; tighter LRS limits will not directly impact businesses and their trade payments or receivables. However, the rupee pressure behind these restrictions will have an impact on businesses, Mr. Pathmanathan noted.

"For MSMEs exporting or importing, the main concern is the volatility of the currency between invoicing and payment.

Many smaller businesses don't actively manage their foreign exchange exposure and will only convert when they need the money. During times like now, when the regulator is showing concern for the rupee, this becomes apparent," he said.

Market players are also expecting certain amendments to overseas direct investment (ODI), which will impact businesses, including MSMEs.

Any earlier instance?

In 2013, during the "taper tantrum", the Indian rupee faced a severe currency crisis and suffered a sharp decline. This prompted the central bank to tighten the LRS limit to $75,000 from $2,00,000 and to temporarily suspend residents from buying immovable property overseas.

The limit was eventually restored to $1,25,000 in 2014 and to the $2,50,000 ceiling in 2015, once external stability and foreign exchange buffers were comfortably rebuilt.

New limit

So far, it has only been a proposal. The Ministry of Finance is in regular talks with market regulators, including the RBI and the Securities and Exchange Board of India, as well as other industry bodies, to assess ways to attract foreign capital to Indian markets and to limit dollar outflows.

Until the RBI issues a formal notification amending its Master Direction, resident individuals can continue remitting up to $2,50,000 per financial year under existing rules.

=> RBI
I
LRS
Liberalised Remittance Scheme

YouTube Homework

- RBI

महत्वपूर्ण तथ्य

- भारतीय रिजर्व बैंक (RBI) की **लिबरलाइज्ड रेमिटेंस स्कीम (Liberalised Remittance Scheme - LRS)** एक ऐसी सुविधा है जिसके तहत भारत के निवासी व्यक्ति (Resident Individuals) देश से बाहर (विदेशों में) आसानी से पैसा भेज सकते हैं।
- एलआरएस (LRS) से जुड़ी मुख्य बातें निम्नलिखित हैं:

1. मुख्य सीमा (Annual Limit)

- इस योजना के तहत कोई भी योग्य भारतीय नागरिक एक वित्तीय वर्ष (1 अप्रैल से 31 मार्च) में बिना किसी पूर्व अनुमति के अधिकतम **2,50,000 अमेरिकी डॉलर (USD 250,000)** या इसके समकक्ष राशि विदेश भेज सकता है।
- यह सीमा प्रति व्यक्ति (प्रत्येक व्यक्तिगत पैन कार्ड धारक पर) लागू होती है, जिसमें **नाबालिग (Minors)** भी शामिल हैं। कॉर्पोरेट, पार्टनरशिप फर्म या ट्रस्ट इस योजना के पात्र नहीं हैं।

- **2. किन कामों के लिए पैसे भेजे जा सकते हैं? (Allowed Purposes)**
- LRS का उपयोग **चालू खाता (Current Account)** और **पूंजी खाता (Capital Account)** दोनों तरह के लेन-देन के लिए किया जा सकता है:
- **विदेशी शिक्षा:** विदेश में पढ़ाई, ट्यूशन फीस और रहने का खर्च।
- **चिकित्सा उपचार:** विदेश में इलाज और मेडिकल खर्च।
- **यात्रा (Travel):** निजी विदेश यात्राएं, व्यापारिक दौरे या अंतरराष्ट्रीय टूर पैकेज की बुकिंग।
- **विदेशी निवेश:** विदेशों में शेयर बाजार, म्यूचुअल फंड या डेट इंस्ट्रूमेंट्स में निवेश (OPI), या किसी विदेशी कंपनी में हिस्सेदारी खरीदना (ODI)।
- **संपत्ति की खरीद:** विदेश में कोई अचल संपत्ति (Immovable Property) खरीदना।
- **उपहार और दान:** विदेश में रहने वाले किसी व्यक्ति को उपहार भेजना या किसी अंतरराष्ट्रीय संगठन को दान देना।
- **रिश्तों की देखरेख:** विदेश में रह रहे करीबी रिश्तेदारों को आर्थिक सहायता भेजना।

महत्वपूर्ण तथ्य

3. क्या प्रतिबंधित है? (Prohibited Transactions)

- आप LRS के जरिए लॉटरी टिकट खरीदने, जुआ खेलने, घुड़दौड़, या प्रतिबंधित पत्रिकाओं/उत्पादों को खरीदने के लिए पैसे नहीं भेज सकते।
- आतंकवादी गतिविधियों या वित्तीय कार्रवाई कार्य बल (FATF) द्वारा प्रतिबंधित देशों/व्यक्तियों को फंड ट्रांसफर करना पूरी तरह वर्जित है।

4. टैक्स कलेक्टेड एट सोर्स (TCS नियम)

- यदि एक वित्तीय वर्ष में कुल विदेश प्रेषण (Remittance) **₹10 लाख से अधिक** हो जाता है, तो बैंक राशि पर **TCS (Tax Collected at Source)** काटते हैं:
  - **शिक्षा (लोन के माध्यम से वित्तपोषित नहीं) और चिकित्सा उपचार:** ₹10 लाख से ऊपर की राशि पर **2%** TCS।
  - **विदेश यात्रा/टूर पैकेज:** ₹10 लाख से ऊपर की राशि पर **2%** TCS।
  - **अन्य सभी उद्देश्य (जैसे निवेश, उपहार आदि):** ₹10 लाख से ऊपर की राशि पर **20%** TCS लागू होता है।

5. आवश्यक दस्तावेज (Documents Required)

- पैसा भेजने के लिए **पैन कार्ड (PAN Card)** होना अनिवार्य है।
- बैंक में **फॉर्म A2 (Form A2)** भरना होता है और पैसे भेजने के उद्देश्य (जैसे यूनिवर्सिटी का एडमिशन लेटर, मेडिकल बिल आदि) से जुड़े दस्तावेज दिखाने होते हैं।

महत्वपूर्ण तथ्य

Beijing hails significance of Trump, Xi, Putin meet

Ananth Krishnan
BEIJING

Thursday's summit meeting between the leaders of the U.S., China and Russia will be "of groundbreaking significance", Beijing said on Monday, hailing the symbolism of a meeting of the three leaders taking place in China.

China's Foreign Ministry said President Xi Jinping will host the summit with U.S. President Donald Trump and Russian President Vladimir Putin in Shenzhen on November 19, on the sidelines of the APEC summit.

"The upcoming China-Russia-U.S. summit in Shenzhen will mark the first-ever face-to-face meeting among the heads of



Mao Ning

state of the three countries. The three leaders will exchange views in depth on safeguarding world peace and promoting strategic stability in major-country relations, and the meeting will be of groundbreaking significance," Foreign Ministry spokesperson Mao Ning said, adding that "strengthening communication, managing differences and stabilising relations among China, Russia and the U.S. serve the interests of all three countries".

Symbol over substance

The meeting is likely to be more symbolic than substantial. U.S. officials have indicated that the agenda is the Ukraine war, the situation in West Asia, including global energy supplies, and nuclear arms control. Whether there will be any concrete outcomes remains to be seen.

That has not, however, dampened enthusiasm in China, where state media has hailed the significance of the meeting.

Beijing officially eschews references to a "G2" with the U.S. or a "G3" with the two countries and Russia, maintaining that it supports multipolarity. At the same time, the symbolism of China hosting the meeting has been seized upon to highlight Beijing's global standing.

"The fact that China, Russia and the U.S. will sit down for face-to-face talks once again demonstrates that the head-of-state diplomacy plays an irreplaceable role in providing strategic guidance," an editorial in the *Global Times* said. "The effort to foster a new type of major-country relationship marks a new phase in China's major-country diplomacy with Chinese characteristics, featured by proactive leadership and systematic construction. The meeting is a manifestation of the international community's high recognition of China's image as a stable and responsible major country."

Few experts in China expect substantial outcomes amid what they acknowledge is growing strategic rivalry between China and the U.S. on the one hand, and an enduring rift between Russia and the West on the othe. Russia was "most enthusiastic" among the three for the summit, Su Liuqiang, a scholar at the Centre for American Studies at the Shanghai Institutes for International Studies, said in an interview with state media last week, adding that an informal exchange was likelier than a more structured, formal trilateral summit.

महत्वपूर्ण तथ्य

APEC शिखर सम्मेलन 2026 (33rd APEC Economic Leaders' Meeting) से जुड़ी मुख्य जानकारी नीचे दी गई है:

- **कहाँ हो रहा है (Venue):** यह सम्मेलन **चीन (China)** के गुआंग्डोंग प्रांत के प्रमुख शहर **शेनझेन (Shenzhen)** में आयोजित किया जा रहा है। इसका मुख्य आयोजन स्थल शेनझेन के फुतियान (Futian) जिले स्थित **शेनझेन इंटरनेशनल एक्सचेंज सेंटर (Shenzhen International Exchange Center)** है। (चीन ने इससे पहले 2001 में शंघाई और 2014 में बीजिंग में APEC की मेज़बानी की थी।)
- **कब से कब तक हो रहा है (Dates):** मुख्य शिखर सम्मेलन (**APEC Economic Leaders' Meeting**) **18 से 19 नवंबर 2026** तक आयोजित हो रहा है। इससे ठीक पहले **17 से 18 नवंबर 2026** के दौरान **APEC CEO समिट** (बिजनेस लीडर्स समिट) का आयोजन किया जा रहा है।
- **थीम (Theme):** 2026 के सम्मेलन की आधिकारिक थीम **"Building an Asia-Pacific Community to Prosper Together"** (एक साथ समृद्ध होने के लिए एशिया-प्रशांत समुदाय का निर्माण) रखी गई है।
- **प्रमुख बिंदु:** इस सम्मेलन में एशिया-प्रशांत क्षेत्र की 21 सदस्य अर्थव्यवस्थाओं के नेता व्यापार, सप्लाई चेन, डिजिटल अर्थव्यवस्था, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI) और ऊर्जा सुरक्षा जैसे विषयों पर चर्चा कर रहे हैं। इसके अलावा, इस शिखर सम्मेलन के दौरान 19 नवंबर को चीन, रूस और अमेरिका के शीर्ष नेताओं की एक विशेष बैठक भी निर्धारित की गई है।

महत्वपूर्ण तथ्य

Indo-ASEAN ties are at the heart of India's Act East Policy, says PM ahead of Manila summit

Kallol Bhattacherjee
NEW DELHI



Philippine President Ferdinand Marcos Jr. welcomes Prime Minister Narendra Modi ahead of 49th ASEAN Summit in Manila. AFP

India's relationship with the ASEAN region is at the "heart of India's Act East Policy", Prime Minister Narendra Modi said on Monday, before leaving for Manila, where he is set to participate in the 49th ASEAN Summit.

He will also participate in the 23rd ASEAN-India summit and the 21st East Asia Summit on Tuesday.

"Our relationship with ASEAN countries is at the heart of India's Act East Policy and occupies a central place in our MAHASAGAR vision. Our ties, rooted in centuries of civilisational exchanges, have grown into a dynamic partnership spanning trade, connectivity, maritime security, technology and people-to-people relations," he said.

At the ASEAN-India summit, Mr. Modi will work with ASEAN leaders to build on the "progress of our comprehensive Strategic Partnership and give further momentum to our shared aspirations for growth, connectivity and prosperity," he added.

The Prime Minister attended a gala dinner hosted by the Philippines, Ferdinand Marcos Jr., on Monday evening in Manila.

Australian Prime Minister Anthony Albanese is also in Manila for the summit, as Australia is an ASEAN partner country. U.S. President Donald Trump is also expected to arrive in Manila for the ASEAN summitand associated meetings, after which he will proceed to Shenzhen for the Asia-Pacific Economic Cooperation (APEC) meeting.

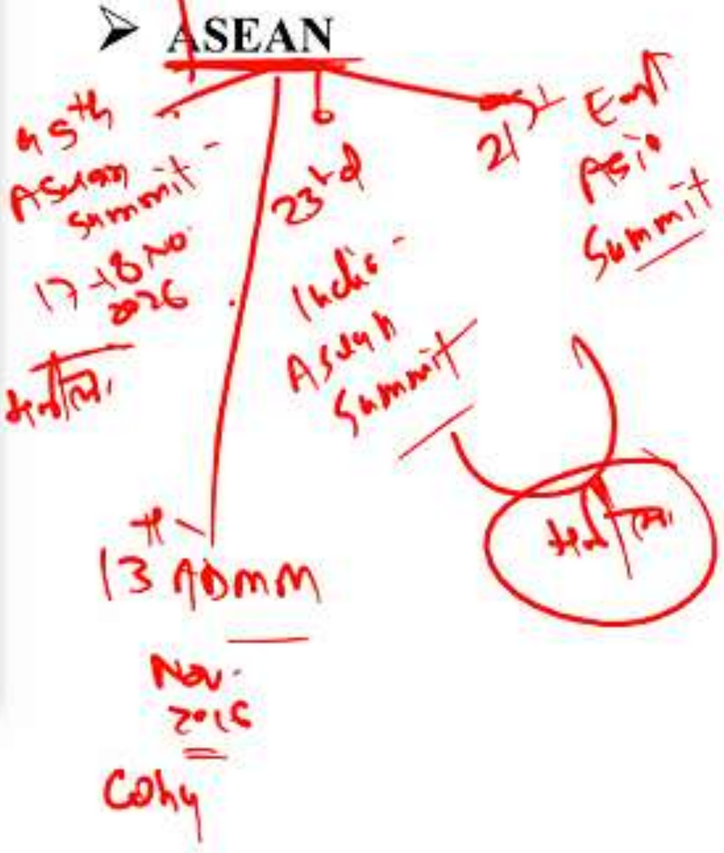
Quad meeting likely

The Hindu had reported earlier that the Quad leaders summit, featuring Mr. Modi, Japanese Prime Minister Sanae Takaichi, Mr. Albanese, and Mr. Trump, is also expected to be held on Tuesday evening.

India has been maintaining that the South China Sea should be open for global maritime traffic.

Sources here have said that the expected Quad meeting, which is yet to be announced officially, will send a constructive message on this matter as the Philippines is on the frontlines of territorial issues in the South China Sea. China has been building structures and has often conducted naval patrols aggressively in the region, raising concerns in neighbouring nations.

YouTube Homework



महत्वपूर्ण तथ्य

- वर्ष 2026 में ASEAN (आसियान) की बैठक, 23वां आसियान-भारत शिखर सम्मेलन (ASEAN-India Summit) और 21वां ईस्ट एशिया समिट (East Asia Summit) फिलीपींस की राजधानी मनीला में आयोजित किए जा रहे हैं।

इन बैठकों से जुड़ी मुख्य जानकारियां इस प्रकार हैं:

- ASEAN बैठक (49वां आसियान शिखर सम्मेलन): 15 से 17 नवंबर, 2026 को मेट्रो मनीला (फिलीपींस) में आयोजित हो रही है (इससे पहले 48वां आसियान शिखर सम्मेलन 6-8 मई, 2026 को फिलीपींस के सेबू में हुआ था)।
- 23वां ASEAN-India Summit: 17 नवंबर, 2026 को मनीला, फिलीपींस में आयोजित हो रहा है।
- 21वां East Asia Summit (पूर्वी एशिया शिखर सम्मेलन): यह भी 17 नवंबर, 2026 को मनीला, फिलीपींस में आयोजित हो रहा है।
- अध्यक्षता: वर्ष 2026 में फिलीपींस के राष्ट्रपति फर्डिनेंड आर. मार्कोस जूनियर के नेतृत्व में फिलीपींस आसियान की अध्यक्षता कर रहा है।

महत्वपूर्ण तथ्य

Ukraine launches biggest drone attack on Russia since war began

Russian defences down over 1,300 Ukrainian drones in major attack; aerial barrage targets capital, two oil depots and a key bridge linking Russia to Crimea; Moscow keeps up strikes on power infrastructure as Ukrainians brace for a harsh winter

Associated Press
MOSCOW

Russia intercepted 1,336 drones launched by Ukraine, Russia's Defence Ministry said on Monday, in what was the most claimed interceptions since Moscow's all-out invasion of its neighbour nearly five years ago.

Moscow Mayor Sergei Sobyanin said that around 600 Ukrainian drones had been launched at the Moscow region surrounding the Russian capital since Sunday evening, 191 of which had been brought down.

Russia's Defence Ministry said Ukrainian drones had also been brought down over Crimea, the Black Sea peninsula which Russia seized and annexed from Ukraine in 2014, and over the waters of the Sea of Azov and the Black Sea.



Strategic connect: A view of the Kerch Bridge that links Crimea to Russia, which was hit by Ukrainian drones on Monday. AFP (FILE)

Ukraine also targeted the Kerch Bridge, a key span for moving military and civilian supplies from Russia to Crimea.

Kremlin spokesman Dmitry Peskov insisted the attack caused "insignificant damage."

Ukraine's military claimed hits on two oil depots in Azov and the Ilsky oil refinery in Krasnodar, which it said processes 48 million barrels of oil a year.

Energy facilities hit

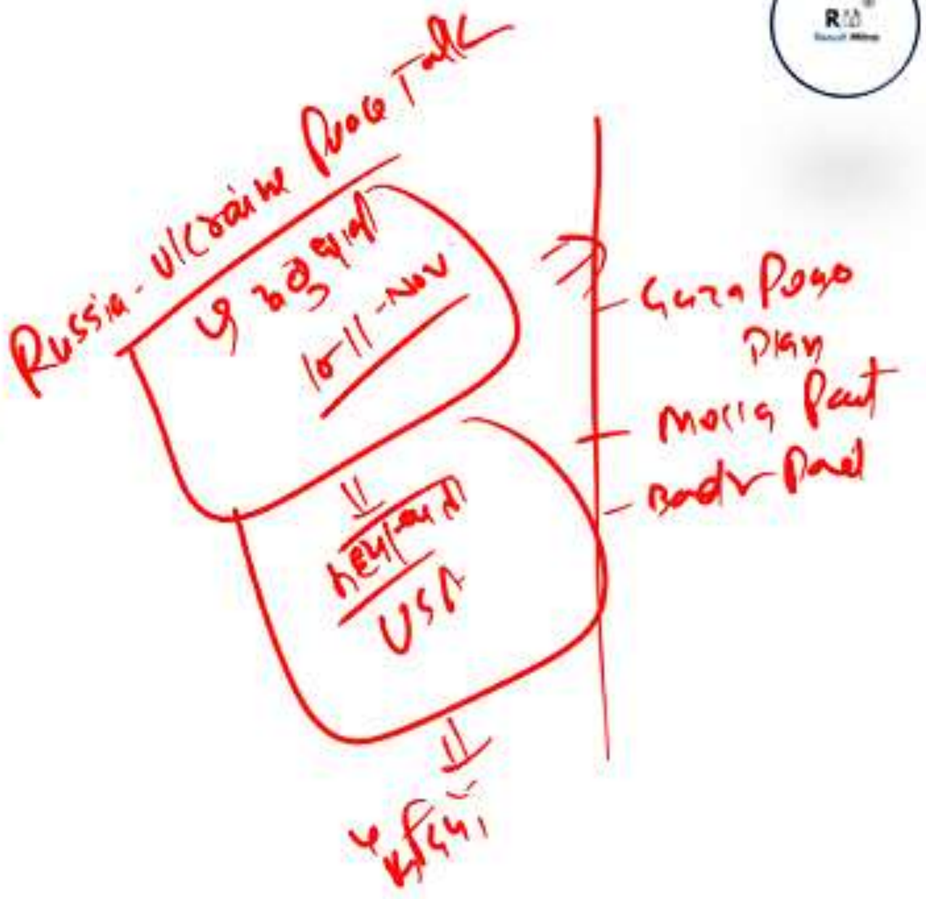
Russia, meanwhile, has battered Ukrainian civilian areas with relentless strikes that seek to choke the economy and break public morale, especially through strikes on the power grid.

Ukrainians are bracing for what could be the hardest winter since the war began. Mr. Zelenskyy says the Russian strategy is to bombard specific areas for days, flattening energy infrastructure.

Russian strikes on power lines and substations in the southern Zaporizhzhia and central Dnipropetrovsk regions left hundreds of thousands of people without electricity, Ukrainian Prime Minister Serhii Koretskyi said on Monday.

A Russian attack in Dnipro killed one person and injured three, local officials said, while one person was killed and four were wounded by a strike in the Kharkiv region.

The overnight aerial attack by Ukraine surpassed the 1,254 drones that were registered as shot down by Russia on October 29.



महत्वपूर्ण तथ्य

Bahrain sentences dozens to life over 'links' to Iran's IRGC

Agence France-Presse
MANAMA

Court hands jail terms to over 60 Shia Muslims, mostly clerics, on terrorism charges

A Bahraini court sentenced dozens of Shia Muslims, most of them clerics, to life in prison on terror charges on Monday, as authorities crack down on groups it accuses of ties to Iran.

Since the Iran war began with U.S.-Israeli attacks, Gulf states that have borne the brunt of the Islamic republic's retaliatory strikes have cracked down on what they call cells with links to the Islamic Revolutionary Guard Corps (IRGC).

Bahrain, a Sunni Muslim kingdom, has a large Shia population that has long complained of marginalisation. Authorities in the country have denied cracking down on citizens based on their religious identity.

On Monday, the criminal court sentenced 64 Shias, 57 of them clerics, to life in prison. It also sentenced five others to 15 years in prison, according to the Britain-based Bahrain Institute for Rights and Democracy (BIRD).

A Bahraini official, speaking to AFP on condition of anonymity, confirmed the figures.

The mass trial involves 69 Bahraini Shias, including 60 clerics – 13 of whom were tried in absentia, including prominent cleric Ayatollah Isa Qassim, according to BIRD.

Bahrain's official news agency confirmed the sentencing, adding that more than $21 million was confiscated from defendants.

"The defendants in the case of the terrorist group linked with the Revolutionary Guards were convicted and handed sentences ranging between life in prison and 15 years," the Bahrain News Agency said.

It said they were convicted of "managing a terrorist group linked to the Iranian Revolutionary Guards, which advocates for the overthrow of the ruling system".

The Shias sentenced on Monday had been arrested and tried in separate groups earlier this year.

"Since Bahrain's judiciary was established in the 1920s, the country has never witnessed persecution of Shia clerics on this scale," the BIRD group said.

महत्वपूर्ण तथ्य

IN THE SADDLE

Jay Shah re-elected unopposed as ICC chair for a second term



FILE PHOTO

Jay Shah was re-elected unopposed for a second term as chair of the International Cricket Council at the governing body's board meeting in Bali. Shah will oversee cricket's return to the Olympics at the 2028 Los Angeles Games during his second two-year term. The sport's only other appearance at the Olympics was in 1900.

YouTube Homework

- BCCI
- ICC

महत्वपूर्ण तथ्य

सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्रालय

Azadi ka Amrit Mahotsav

45वें इंटरनैशनल ट्रैड फेयर 2026 में सामाजिक न्याय एव आधेकारिता मंत्रालय की भागीदारी समावेशी आर्थिक सशक्तिकरण, उद्यमिता और स्थायी आजीविका के प्रति प्रतिबद्धता को मज़बूत करती है

19 राज्यों के 130 से ज़्यादा कारीगरों ने हस्तशिल्प, हथकरघा और पारंपरिक उत्पाद प्रदर्शित किए

15 नवंबर तक कुल बिक्री लगभग 5.50 लाख रुपए तक पहुँच गई, जो भाग लेने वाले कारीगरों के लिए बाज़ार में अच्छे अवसरों दिखाता है

पारंपरिक कारीगरों और उद्यमियों के लिए राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय बाज़ार तक पहुँच को मज़बूत करने के लिए ट्यूलिप ब्रांड को बढ़ावा दिया गया

प्रविष्टि तिथि: 16 NOV 2026 7:52PM by PIB Delhi

केंद्रीय सामाजिक न्याय और अधिकारिता मंत्रालय, राष्ट्रीय राजधानी में भारत मंडपम में चल रहे 45वें भारत अंतर्राष्ट्रीय व्यापार मेले (आईआईटीएफ) 2026 में अपनी भागीदारी के से पारंपरिक शिल्प कौशल, उद्यमिता और सतत आजीविका के अवसरों को लगातार बढ़ावा दे रहा है।



Home Assignment

- National OCEAN day
- DAY-NRLM

RESULT MITRA

— Most Trusted IAS/PCS Institute —

UPPCS 2027

Foundation Batch (Prelims + Mains)

Start – 10th December 2026

Fee – 4999/- | Validity - 1 Year

Class Module – Live + Recorded

Special Discount

499/-

(Till 1st December)

Contact us – 9235313184, 9235446806, 7291914092, 7291914093, 7291914095, 7291914098

Contact time :-

Monday to Saturday – 10 AM – 06 PM

Thanks For Watching

Follow us for more Updates

@RRESULTMITRAOFFICIAL

Join our Telegram

@SUNILVERMA_THEIASMENTOR

Follow on Instagram

Subscribe Now

Stay Connected

Learn Share Grow Together ♡

Better Students Brighter Tomorrow

DISCIPLINE
CONSISTENCY
SUCCESS

Small Steps Big Results